

रमज़ान, दस काम और हम "Ramadan, Ten Tasks, and We"

Authored By:

SHAIKH Dr. ARSHAD BASHEER UMARI MADANI waffaqahullah

Hafiz and Aalim, Fazil (Madina University, K.S.A), M.B.A

Founder & Director of AskIslamPedia.com

Chairman: Ocean the ABM School, Hyderabad, TS, INDIA

+91 92906 21633 (WhatsApp only)

www.abmqurannotes.com | www.askislampedia.com | www.askmadanicom

REVIEWED BY

Shaikh Razaullah Abdul Kareem Madani Hafizahullaah

Nazim Ta'limaat Jamia Sayyed Nazeer Husain Muhaddis Dahlwi

(Kaamiyaab Munazir, Muhaddis, Faqeeh, Aalami Muhazir)

TRANSLATED INTO HINDI BY

Shaikh Mohammed Ajmal Ansari Umari

Shariah Advisor Halal India, Islamic Affairs Committee member SGS Dubai

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" (अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील, अति दयालु है)
"हुकूक अत-तबअ महफूज़ा" (सर्वाधिकार सुरक्षित)

Author:

ڈاکٹر حافظ ارشد بشیر عمری مدنی وفقہ اللہ

Shaikh Dr. Arshad Basheer Umari Madani

Hafiz, Aalim, Faazil (Madina University, KSA), MBA.

Founder & Director of AskIslamPedia.com Chairman: Ocean The ABM School, Hyderabad.

Contact: +91 92906 21633 (WhatsApp only)

Reviewer

شیخ رضا اللہ عبدالکریم مدنی حفظہ اللہ

Shaikh Razaullah Abdul Kareem Madani Hafizahullaah

Position: Nazim Ta'limaat, Jamia Sayyed Nazeer Husain Muhaddis Dahlwi

Expertise: Kaamiyaab Munazir, Muhaddis, Faqeeh, Aalami Muhazir

CHECK LIST

Book No: 28 – Edition: 2022

Publisher & Printer:

ABM Print Time

☎ +91-9390993901, +91-9989022928

✉ abm.printtime@gmail.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ईश्वर के नाम पर, जो अत्यन्त दयालु, अत्यन्त कृपालु है।

प्रस्तावना

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ، وَنُسْتَعِينُهُ، وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا، وَسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يَضِلَّ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ، وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِإِحْسَانٍ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ، وَسَلَّم تَسْلِيمًا كَثِيرًا، أَمَّا بَعْدُ:

"सिर्फ अल्लाह की हम्द (प्रशंसा) है, और उस नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर सलात और सलाम हो जिनके बाद कोई नबी नहीं, और उनकी ज़ा (परिवार) और सभी साथियों पर। इसके बाद:"

रमज़ान एक मुबारक महीना है। मुसलमानों के दिलों में भी इसकी बहुत अहमियत है। इसलिए वे इसमें पूजा-पाठ और शुभ कार्यों का विशेष इंतजाम करते हैं।

इस छोटी पुस्तिका में आपके लिए इस महीने से संबंधित विशेष प्रार्थनाओं और उनके शिष्टाचार का संदर्भ सहित उल्लेख किया गया है ताकि आप इस महीने में अल्लाह की रहमतों, महानता और विशेष बारिश का लाभ उठाकर अपनी इच्छाओं को पूरा कर सकें। हालाँकि, इस मैनुअल में निम्नलिखित शामिल हैं:

- ❖ भाषणों और उपदेशों के लिए संक्षिप्त नोट्स(short notes)
- ❖ रमज़ान में करने योग्य कार्यों की चेकलिस्ट(checklist)
- ❖ गृह नवीकरणकर्ताओं के लिए दिशानिर्देश
- ❖ नोट: लंबाई से बचने के लिए, मूल अरबी वाक्यांशों की नकल नहीं की गई है, केवल संदर्भ का उपयोग किया गया है। -

अंत में, मैं अल्लाह को उसकी कृपा और कृपा से धर्म की सेवा करने का अवसर देने के लिए धन्यवाद देता हूं। मैं अल्लाह ताला से प्रार्थना करता हूं कि वह उन्हें सम्मानजनक स्वीकृति प्रदान करें और इसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाएं, और परोपकारियों को उनके सभी वैध मामलों में खुश करें, और उनके और मेरे पालने को शुभकामनाओं से भर दें, आमीन, दुनिया के भगवान। निवेदक

शेख अरशद बशीर उमरी मदनी सलामुल्लाह



सूची

1	रमज़ान और रोज़े की फ़ज़ीलतें एक नज़र में	5
2	रमज़ान, विश्वास और कर्मों का नवीनीकरण और 9 निषेधों से बचना	8
3	रमज़ान आत्मचिंतन का महीना है; बाह्य क्रियाओं की वैधता पहले आंतरिक कार्यों और हृदय सुधार की चिंता करें	11
4	रमज़ान और घर का माहौल	12
5	व्रत के कुछ नियम एवं समस्याएँ	21
6	रमज़ान और मस्जिदें	27
7	रमज़ान और नमाज़	32
8	रमज़ान और कुरान	
9	रमज़ान के बाद दृढ़ता का कारण	37
10	रज्जब, शाबान और शव्वाल संक्षिप्त परिचय	38

ASK ISLAM PEDIA
GATEWAY FOR ISLAMIC INFORMATION
Free Online Islamic Encyclopedia

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1 रमज़ान और रोज़े की फ़ज़ीलतें एक नज़र में

रमज़ान और रोज़े की फ़ज़ीलत

- 1) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने रोजेदार को जन्नत की खुशखबरी दी। (सहीह बुखारी: 1397 साहिह मुस्लिम: 14)
- 2) व्रत करने वालों (रोज़ेदार) के लिये स्वर्ग में एक विशेष द्वार बनाया गया है, जिसका नाम रेयान है। (सहीह बुखारी: 1152 साहिह मुस्लिम: 1896)
- 3) रोज़ेदार शिद के साथ होंगे अल्तागीब (1003)
- 4) निश्चय ही रोजेदार के पिछले पाप माफ कर दिए जाते हैं। (सहीह बुखारी: 1901, सहीह मुस्लिम: 759)
- 5) रमज़ान में, स्वर्ग और दया के द्वार पूरी तरह से खोल दिए जाते हैं, नर्क के द्वार पूरी तरह से बंद कर दिए जाते हैं, और विद्रोही शैतानों को कैद कर लिया जाता है। (1899): हैह बुखारी
- 6) रोजेदार के मुंह की गंध अल्लाह के निकट कस्तूरी से भी अधिक पवित्र है। (साहिह बुखारी: 1904)
- 7) माहे रमजान की हर रात अल्लाह ताल्लाह जहन्नमयो को जहन्नम से आज़ाद करते है (एबं मजह : 1642, सहा अबन माह: 1331)
- 8) क़यामत के दिन रोज़ेदार को कौन आदेश दे? इच्छा (साहिह अल-तुर्गीब: 984)
- 9) उपवास भलाई का द्वार है। (तिर्मिज़ी: 2616 सहीह अल-तरगीब: 983)
- 10) हजार महीनों से सबसे अच्छी रात (शबे कद्र) रमजान के महीने में होती है। (सहीह इब्न माज़ा: 1333 अबन माह: 1644)
- 11) कुरान के अवतरण का सम्मान रमजान को दिया जाता है (185): (बकरह
- 12) हर अच्छे काम का सवाब 10 गुना से बढ़ाकर 700 गुना कर देना यह उपवास के अलावा दिया जाता है, जिसके लिए अल्लाह सर्वशक्तिमान उसे इनाम देगा। (सहीह मुस्लिम:

1151)

- 13) एक नफ़ल रोज़ा सत्तर साल जहन्नुम से दूर कर देता है, तो फर्ज़ रोज़े की फज़ीलत कितनी होगी? (सहीह बुखारी: 2840)
- 14) रमज़ान में उमरा के लिए नबी अलीम का इनाम यह एक साथ हज करने के बराबर हो जाता है। (सहीह) 1256 (बुखारी: 1863, सहीह मुस्लिम)।
- 15) सुहर से इफ़तार तक रोजेदार की दुआ कबूल होती थी -है (तिर्मिधि: 3598, इब्र माजाह (1752)

वुज़ू के फ़ज़ाएल (वुज़ू के गुण / वुज़ू के लाभ)

- 1) वुज़ू करने से कयामत के दिन तुम्हें चमक मिलेगी होगा। (सहीह बुखारी: 136)
- 2) वुज़ू आधा ईमान है। (सुनन तिर्मिज़ी: 3517 सहीह)
- 3) स्नान करने वाले के पिछले (छोटे) पाप क्षमा कर दिये जाते हैं। (सहीह मुस्लिम:229)
- 4) स्नान करने से शरीर के सभी (छोटे) पाप दूर हो जाते हैं। (सहीह मुस्लिम: (244)
- 5) जो मुसलमान अच्छे से वजू करता है और दो रकअत खड़े होकर पढ़ता है तो उस पर जन्नत फर्ज़ हो जाती है। (सहीह मुस्लिम: 234)
- 6) पुनरुत्थान के दिन, आस्तिक का आभूषण उन अंगों पर रहेगा जो स्नान से प्रभावित होंगे। (मसीह
- 7) सर्दी और दर्द में उत्तम स्नान करने से (छोटे-मोटे) पाप दूर हो जाते हैं और पद ऊँचा हो जाता है। (सहीह मुस्लिम: 251)
- 8) क़यामत के दिन वुज़ू करने वालों में ऐसी निशानियाँ प्रमुख होंगी जिनसे पहचान लिया जाएगा कि ये रसूलुल्लाह की उम्मत के लोग हैं। (सहीह मुस्लिम: 249)
- 9) एक आस्तिक बार-बार स्नान करेगा है (सुनन इब्र माजा: 277)
- 10) नोट: पवित्रता के विस्तृत मुद्दे हमारी इस पुस्तक में शामिल नहीं हैं ईश्वर की इच्छा से एक विस्तृत पुस्तक आ रही है।

नमाज़ / प्रार्थना के गुण

- 1) एकेश्वरवाद के बाद प्रार्थना इस्लाम का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। (सहीह बुखारी: 8, सहीह मुस्लिम:16)

- 2) नियमित रूप से पांच वक्त की नमाज अदा करने से सभी छोटे-मोटे गुनाह माफ हो जाते हैं। (सही (667): बुखारी: 528, सही मुस्लिम)
- 3) प्रार्थना पापों की अग्नि को शीतल कर देती है। (सही अल तरगीब 358)
- 4) जो क्रियामत के दिन नेक और शहीदों के साथ नियमित रूप से पाँचों नमाज़ें पढ़ता है होगा। (साहिह अल-तुर्घिब: 361)
- 5) रात के अंधेरे में मस्जिद में आने वाले नमाजियों के लिए पुनरुत्थान के दिन पूरी रोशनी की खुशखबरी है। (सुनन अबी दाऊद: (561)
- 6) मस्जिद में आने वाले उपासक अल्लाह के आगंतुक हैं जिन्हें अल्लाह द्वारा सम्मानित किया गया है। (सहीह अल-तरगीब: (320)
- 7) रसूलुल्लाह अली अलीम की आंखों को ठंडक है (शुद्ध स्त्रीलिंग: 3680)
- 8) प्रार्थना प्रकाश है। (सहीह मुस्लिम: 223)
- 9) नोट: प्रार्थना के विस्तृत मुद्दे इस किताब में शामिल नहीं हैं क्योंकि हम उसके लिए एक विस्तृत किताब लेकर आ रहे हैं, इंशाअल्लाह।

ज़कात के गुण

- 1) जकात एक ऐसा कार्य है जो जन्नत की ओर ले जाता है। (सहीह) 13 (: बुखारी: 1396, सहीह मुस्लिम)।
- 2) सद्का और ज़कात से दौलत कम नहीं होती। (सहीह मुस्लिम: 2588)
- 3) जकात और दान धन और सवाब में वृद्धि का कारण है। (सूरत अल-रम: (39)
- 4) जकात दौलत की बुराई को दूर करती है। (सही अल तरगीब 743)
- 5) जकात धन की शुद्धि का एक साधन है। (सही: बुखारी 1404)
- 6) जकात माल की हिफाजत का जरिया है। (सहीह) 3557 (अल-तरघिब: 744, बहाकी
- 7) जो ज़कात देगा वह नेक और शहीदों के साथ होगा। (साहिह अल-तग़रिब: 749, इब्न खुज़िमा: 2212 (3429), इब्न हिब्बन)
- 8) जकात देने वाला हर साल ईमान का स्वाद चखता है। (सुनन अबू दाऊद: 1582, सहीह)
- 9) जकात और दान गुनाहों का प्रायश्चित है। (सही (144): बुखारी: 1435, सहीह मुस्लिम
- 10) दान से प्रभु का क्रोध दूर होता है। (सहीह शृंखला: 1908)

- 11) क़यामत के दिन दान आस्तिक को छाया देगा।(मुसद्द अहमद: 17333, गीजी)
- 12) नोट: ज़कात के विस्तृत मुद्दे इस पुस्तक में शामिल नहीं हैं क्योंकि ईश्वर की इच्छा से हम इसके लिए एक विस्तृत पुस्तक लेकर आ रहे हैं।

हज और उमरा के गुण

- 1) उमरा गुनाहों का प्रायश्चित है और हज मबरूर (हज मकबूल, पाखंड और गुनाहों से मुक्त होकर जन्नत का इनाम है। (सहीह बुखारी: 1773)
- 2) तीर्थयात्री नवजात शिशु की तरह पापों से शुद्ध हो जाता है। (साहिह बुखारी: 1521)
- 3) हज और उमरा करने वाला शख्स अल्लाह का मेहमान होता है, उसकी दुआ कबूल होती है। (सुनन इब्न माजा: 2893)
- 4) हज और उमरा महिलाओं, कमजोरों, बुजुर्गों और बच्चों का जिहाद है। (साहिह बुखारी: 1861)
- 5) हज पिछले सभी पापों को मिटा देता है। (सहीह मुस्लिम: 121)
- 6) रमज़ान में उमरा करने का सवाब पैगंबर मुहम्मद के साथ हज करने के बराबर है। (सही बुखारी 1863)
- 7) हाजी और उमरा तीर्थयात्रियों को उनके खर्च और प्रयास के अनुसार पुरस्कृत किया जाता है। (साहिह बुखारी: 1787)
- 8) तलबियाह कहने वाले मुसलमान के दायीं या बायीं ओर जो पत्थर, पेड़ पाए जाते हैं और ढीले लोग भी तलबियाह कहलाते हैं, यहाँ तक कि पृथ्वी के दोनों ओर के छोर तक की चीज़ें भी कभी-कभी तलबियाह कहलाती हैं। (तिर्मिधि: 828)

नोट: हज और उमरा के विस्तृत मुद्दों को इस पुस्तक में शामिल नहीं किया गया है क्योंकि हमारे पास इसके लिए एक विस्तृत पुस्तक अल्हम्दुलिल्लाह है, जिसे आप www.abmqurannotes.com से डाउनलोड कर सकते हैं। भगवान ने चाहा तो मैं यह कर सकता हूँ।

रमज़ान, ईमान और अमल (कर्म) का नवीनीकरण, और 9 निषिद्ध चीज़ों से परहेज़

- 1) इस्लाम में आस्था का नवीनीकरण, आस्था और दान के सदस्यों की समझ, समझ और अनुप्रयोग)

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «إِنَّ الْإِيمَانَ لَيَخْلُقُ فِي جَوْفِ أَحَدِكُمْ كَمَا يَخْلُقُ الثَّوْبُ، فَاسْأَلُوا اللَّهَ أَنْ يُجِدَّ الْإِيمَانَ فِي قُلُوبِكُمْ». [رواه الطبراني في المعجم الكبير: ٨٤، وصححه الألباني في صحيح الجامع: ١٥٩٠]

- 2) अब्दुल्ला बिन अम्र बिन आस, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो सकते हैं, कहते हैं कि अल्लाह के दूत, भगवान उन्हें आशीर्वाद दें और उन्हें शांति प्रदान करें, ने कहा: "कपड़े के सड़ने की तरह, विश्वास भी आपके दिल में सड़ जाता है। अल्लाह से प्रार्थना करें, कि वह आपके दिलों में विश्वास को नवीनीकृत करे।" "
- 3) दिव्य प्रेम, पूजा और दिव्यता का नवीनीकरण (धारियात: 56)
- 4) दूत और आज्ञाकारिता के लिए प्यार का नवीनीकरण (अल इमरान: 31)
- 5) आखिरत के लिए भावना और विचार का नवीनीकरण (अल-हश्र: 18)
- 6) अल्लाह के अधिकारों और सेवकों के अधिकारों के बारे में नए सिरे से जागरूकता (सहीह)। 2581: बुखारी: 6267, सहीह मुस्लिम
- 7) प्रत्येक मुसलमान के छह अधिकारों और अल-समित के बारे में जागरूकता को नवीनीकृत करना। (सहीह मुस्लिम: 2162)
- 8) फ़िक्ह अल-इबादत का नवीनीकरण (शुद्धता, उपवास प्रार्थना, ज़कात, हज पर जानकारी की जाँच करना, कमजोर और विषय को छोड़कर सिद्ध हदीसों की आयतों को समझना)
- 9) विश्वास अक्रीदा, पूजा, लेन-देन और नैतिकता का नवीनीकरण
- 10) स्वयं हिसाब-किताब (मुहसबाए नफ़्स)
- 11) सहनशक्ति
- 12) हृदय की शुद्धि
- 13) वसीयत लिखें
- 14) मृत्यु की स्मृति
- 15) भाषा की शुद्धता जैसे शपथ और प्रतिज्ञा और भाषा पर प्रतिबंध, झूठ बोलना/चुगली करना, चुगली करना/चापलूसी, निंदा करना आदि।
- 16) धिक्कार की बहुलता, प्रार्थनाओं का स्मरण और पालन नया है
- 17) धर्मपरायणता कैसे प्राप्त करें? तो कल कैसे मिलेगा? विनम्रता कैसे लायें? कुरान और हदीस का अध्ययन करने के बाद विद्वानों की संगति में बैठें और सीखें

- 18) पश्चाताप करना और क्षमा मांगना सीखें, सैय्यद अल-इस्तिग़फ़र को याद रखें, अल्लाह और उसके सेवकों से क्षमा, आशीर्वाद के लिए आभार।
- 19) धर्मी परिवर्तन
- 20) रमज़ान की बरकतें लौटा रहा हूँ
- 21) माफ़ी मांगो
- 22) बुरी संगत और बुरी जगहों से दूर रहें
- 23) ईश्वर के ज्ञान, रसूल के ज्ञान और इस्लाम के ज्ञान को नवीनीकृत करना (तीन सिद्धांत)
- 24) ज्ञान और विश्वास, अच्छे कर्म, उपदेश और सुधार, और धैर्य (आज्ञाकारिता में धैर्य, अवज्ञा से बचने में धैर्य, विपत्ति का सामना करने में धैर्य)
- 25) विशेष पूजा की व्यवस्था: तरावीह सलात / एतिकाफ / लैलातुल कद्र / उपवास और जकात यदि वर्ष निसाब / उमराह सदका / कुरान पाठ / दुआ और अधिकार के साथ गुजरता है।
- 26) अल्लाह से पश्चाताप, अल्लाह से अपील, अल्लाह के साथ संबंध बनाना, निर्माता के साथ संबंध, देवत्व का आधिपत्य, नाम और गुण)
- 27) मस्जिद से दिल का रिश्ता
- 28) पापों और अपवित्रता से दूर रहना
- 29) कमजोर एवं विषय परम्पराओं, मिथकों एवं खण्डनों से दूर रहें
- 30) शिर्क, अविश्वास और पाखंड जैसे विश्वास में गलत विश्वास से बचें, पूजा में नवीनता से बचें, मामलों में हराम से बचें और जीवन के सभी क्षेत्रों में व्यर्थता से बचें।
- 31) जब बरज़ख में मनुष्य के पापों के कारण सज़ा मिलने वाली होती है, तो चारों ओर से कार्रवाई रोक दी जाती है और उसे सज़ा से बचा लिया जाता है। 3561: इब्न हिब्बान: 3113, सहीह अल-तरगीब (अच्छा)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ «إِنَّ الْمَيِّتَ إِذَا وُضِعَ فِي قَبْرِهِ إِنَّهُ يَسْمَعُ حَقَّقَ نِعَالَهُمْ حِينَ يُؤْلَوْنَ عَنْهُ، فَإِنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَانَتْ الصَّلَاةُ عِنْدَ رَأْسِهِ، وَكَانَ الصِّيَامُ عَنْ يَمِينِهِ، وَكَانَتِ الزَّكَاةُ عَنْ شِمَالِهِ، وَكَانَ فِعْلُ الْخَيْرَاتِ مِنَ الصَّدَقَةِ وَالصَّلَاةِ وَالْمَعْرُوفِ وَالْإِحْسَانِ إِلَى النَّاسِ عِنْدَ رِجْلَيْهِ، فَيُؤْتَى مِنْ قِبَلِ رَأْسِهِ فَتَقُولُ الصَّلَاةُ: مَا قِبَلِي مَدْخُلٌ، ثُمَّ يُؤْتَى مِنْ قِبَلِ يَمِينِهِ فَيَقُولُ الصِّيَامُ: مَا قِبَلِي مَدْخُلٌ، ثُمَّ يُؤْتَى مِنْ قِبَلِ شِمَالِهِ فَتَقُولُ الزَّكَاةُ: مَا قِبَلِي مَدْخُلٌ، ثُمَّ يُؤْتَى مِنْ قِبَلِ

رَجُلَيْهِ فَيَقُولُ فَعَلُ الْخَيْرَاتِ مِنَ الصَّدَقَةِ وَالصَّلَةِ وَالْمَعْرُوفِ وَالْإِحْسَانِ إِلَى النَّاسِ: مَا قَبِلِي مَدْخُلٌ».

अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

"जब मय्यत (मृत व्यक्ति) को क़ब्र में रखा जाता है, तो वह अपने पास से जाने वालों की जूतियों की आहट सुनता है। अगर वह व्यक्ति मोमिन (सच्चा ईमान वाला) होता है, तो उसकी नमाज़ उसके सिर की ओर होती है, उसका रोज़ा उसके दाईं ओर होता है, ज़कात उसके बाईं ओर होती है, और उसके नेक अमल जैसे कि सदक़ा, नमाज़, भलाई और लोगों से अच्छा व्यवहार उसके पैरों की ओर होते हैं।

जब उसके सिर की ओर से क़ब्र में आज़माइश (परीक्षा) के लिए आया जाता है, तो उसकी नमाज़ कहती है: "मेरे पास से कोई रास्ता नहीं।"

फिर दाईं ओर से आता है, तो उसका रोज़ा कहता है: "मेरे पास से कोई रास्ता नहीं।"

फिर बाईं ओर से आता है, तो उसकी ज़कात कहती है: "मेरे पास से कोई रास्ता नहीं।"

फिर पैरों की ओर से आता है, तो उसके नेक अमल, सदक़ा, नमाज़, भलाई और लोगों से अच्छा व्यवहार कहता है: "मेरे पास से कोई रास्ता नहीं।"

(इब्ने हिब्बान: 3113, सहीह तरगीब: 3561, सुन्नन)

रमज़ान और औरतें

- 1) शुक्र (आभार) का महीना है, न कि षुक्रेपन (कृतघ्नता) का।
- 2) यह ज़रूरी दीनी अहकाम (धार्मिक आदेश) जैसे रोज़ा, ज़कात, पवित्रता, नमाज़, दुआ, अज़कार और इबादत को सीखने का महीना है।
- 3) यह शिर्क (अल्लाह के साथ किसी को साझी बनाने) और बिदअत (नवाचार) से तौबा करने और सही अकीदा (विश्वास) सीखने का महीना है।
- 4) यह सियाम (रोज़ा) का महीना है, न कि सिर्फ़ भूखा-प्यासा रहने का।
- 5) यह कुरआन का महीना है, न कि बेकार और फिज़ूल बातों में समय बर्बाद करने का।
- 6) यह उदारता और भलाई का महीना है, न कि फिज़ूल और बेकार चीज़ों में समय गंवाने का।

- 7) यह क्रियाम (नमाज़ और इबादत में खड़े रहने) का महीना है।
- 8) सिर्फ खाना-पीना छोड़ना मकसद नहीं, बल्कि पूरे शरीर को अल्लाह के आदेशों का पालन कराने का महीना है।
- 9) रोज़े की एक महीने की पाबंदी हमें समय के महत्व और अनुशासन (डिसिप्लिन) का पालन करना सिखाती है।

रमज़ान में 9 चीज़ों से बचना चाहिए

- 1) अगर आपने पिछले साल रमज़ान के कुछ रोजे मिस कर दिए हैं तो शाबान में ही उनकी भरपाई कर लें।
- 2) कुछ लोग जो रमज़ान के दौरान रोज़ा रखते हैं या एहतियात के तौर पर बिल्कुल भी रोज़ा नहीं रखते हैं, शाबान के आखिरी दो दिनों में रोज़ा रखना मना है।
- 3) रमज़ान का महीना इबादत, उपवास, रात में रहना, कुरान पढ़ना, रमज़ान सीखना, ज्ञान प्राप्त करना, स्वयं का अनुवाद करना, विश्वास में सुधार करना और ईश्वर से जुड़ने का महीना है; स्व-निर्मित कार्यों में समय बर्बाद करके और काम का बहाना बनाकर पूजा के इन आवश्यक कार्यों से बचने का प्रयास न करें। पूरे महीने के लिए एक पूरी टाइमलाइन बनाएं
- 4) बाहरी पूजा-पाठ, विषय-वस्तु और सदाचार से हृदय को सुधारें और पूरे ध्यान से बाहरी और आंतरिक सुधार का प्रयास करें।
- 5) अपने उद्धार के लिए, क्षमा मांगें और क्षमा मांगें, विशेष रूप से सैय्यद अल-इस्तग़फ़र से
- 6) वाद-विवाद में न पड़ें
- 7) रमज़ान में समय बिताने के लिए खेलों का आयोजन न करें
- 8) पूरे महीने अपना समय अच्छी संगति, अच्छे लोगों, धार्मिक समारोहों में निवेश करें; इसका विरोध करके अपनी इबादत, अपना रोज़ा खराब मत करो
- 9) और विश्वास की शुद्धता, पूजा में परिश्रम, कुरान पढ़ने में रुचि, प्रार्थनाओं की प्रचुरता, भिक्षा और दान के साथ मस्जिदों में उपस्थित होना, जितना संभव हो सके वहां की जरूरतों का ख्याल रखना।

3. रमज़ान तज़किया-ए-नफ़्स (आत्मशुद्धि) का महीना है: बाहरी आमाल (कार्यों) की सुधार से पहले, आंतरिक आमाल और दिल की इस्लाह (सुधार) की फ़िक्र करें।

आत्म-सुधार के लिए ... और ज्ञानवर्धक सामग्री प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित चीज़ों का उपयोग करें।

- 1) ईमान, इखलास, और पालन (अर्थ, अर्थ, आवश्यकताएँ)
- 2) अच्छा महसूस कर रही हूँ
- 3) नरक से मुक्ति की चिन्ता
- 4) पाठ की व्यवस्था और समझ
- 5) कुरान को 40 दिनों में ख़त्म करने की साल भर की आदत बना लें
- 6) प्रत्येक प्रार्थना से पहले और बाद में कम से कम दो पृष्ठ अवश्य पढ़ें
- 7) इस्लामी शिक्षाएं (अकीदा, फ़िक्रह, इबादत, मुद्दों और फैसलों के लिए किताबें, ऑडियो, वीडियो सुनने की व्यवस्था करें, एक समय तय करें)
- 8) प्रार्थनाओं की व्यवस्था, नई प्रार्थनाओं को याद करना, सुबह और शाम धिक्र, धिक्र अल-सलावत और सलावत के बाद, सामान्य दुआ और क्षमा के लिए प्रार्थना)
- 9) पैगम्बरों और धर्मी सलफ की घटनाओं से युक्त पुस्तकों का अध्ययन करें
- 10) प्रसवोत्तर पूजा की व्यवस्था करें

4. रमज़ान और घर का माहौल

- 1) सबके लिए मुशफ़ और रहल का इंतज़ाम
- 2) महिलाओं और पुरुषों के लिए मुसली (प्रार्थना) (दोहराव के लिए पुरुष)
- 3) घर पर एक ऑडियो-वीडियो कथन प्रणाली या उपयुक्त पुस्तकों का पुस्तकालय
- 4) परिवार के सदस्यों के सामने रमज़ान से संबंधित आयतें और हदीसें पढ़ना
- 5) रमज़ान से पहले घर पर खाने-पीने का इंतज़ाम
- 6) घर पर सोने, जागने, खाने, पीने और सोशल मीडिया का उपयोग करने की दिनचर्या स्थापित करें

- 7) कार्यक्रम भोज का कार्यक्रम स्पष्ट है और समय बर्बाद किए बिना, दया का इनाम और मुसलमानों के अधिकारों और मानवता के अधिकारों का भुगतान करें
- 8) यदि संभव हो तो परिवार के साथ उमरा की योजना बनाएं और
- 9) सैमन (उपवास करने वालों) के लिए भोज की योजना बनाना।
- 10) बलोग अल-मरम और रियाद अल-सलीहीन से रमज़ान (उपवास, ज़कात, कुरान, दुआ, इबादत) से संबंधित हदीसों पढ़ना।

5 रोज़े के कुछ अहकाम और परेशानियाँ

बिना किसी उचित कारण के रोज़ा छोड़ने की सज़ा।

अबू इमाम बहली, ईश्वर उनसे प्रसन्न हों, बताते हैं: मैंने पवित्र पैगंबर (ﷺ) को सुना, ईश्वर उन्हें आशीर्वाद दें और उन्हें शांति प्रदान करें, कहते हैं: (मैं सो रहा था जब दो आदमी मेरे पास आए और मेरी बाँहें पकड़ लीं और मेरे साथ बहुत कठिन व्यवहार किया और उन्होंने कहा: इस पर चढ़ जाओ, मैंने उनसे कहा कि मेरे पास इस पर चढ़ने की ताकत नहीं है, उन दोनों ने कहा कि हम आपके लिए इसे आसान बना देंगे, इसलिए मैं पहाड़ पर चढ़ गया, जब मैं शीर्ष पर पहुंचा, तो जोर से आवाजें आ रही थीं।

मैंने कहा ये कैसी आवाजें हैं? उन्होंने कहा: यह तो नरक वालों की पुकार है, फिर वे मुझे आगे ले गए, जहां कुछ लोग कीलों से लटके हुए थे और उनके होंठ कटे हुए थे और उनसे खून बह रहा था। मैंने कहा, ये कौन लोग हैं? उन्होंने कहा: ये वे लोग हैं जो रोज़ा तोड़ने से पहले अपना रोज़ा खोलते थे। इब्न खुज़िमा (1986) और इब्न हिब्वन (7491), अल्लामा अल-अल्बानी, भगवान उस पर दया कर सकते हैं, ने अल-ज़मान (1509) में इस हदीस को प्रामाणिक घोषित किया है।

अल्लामा अल-अल्बानी, भगवान उन पर दया करें, कहते हैं:

यह उस व्यक्ति की सज़ा है जो रोज़ा रखने के बाद इफ्तार से पहले जानबूझकर अपना रोज़ा तोड़ देता है। हम अल्लाह से इस दुनिया और उसके बाद शांति और समृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं। इमाम ज़हबी, भगवान उस पर दया कर सकते हैं, अपनी पुस्तक अल-कबायर में कहते हैं: विश्वासियों के बीच यह स्थापित किया गया है कि जो कोई भी बिना किसी वैध कारण या बीमारी के रमज़ान के एक भी रोज़े को छोड़ देता है, वह व्यभिचारी और शराबी से भी बदतर है।

इस्लाम पर भी संदेह किया जाता है और वे उसे विधर्मी और पथभ्रष्ट मानते हैं।"

(अल-कबैर: पृष्ठ 64)

रमज़ान के निषेध

- 1) विशेष रमज़ान और रमज़ान मुहर्रम के उपवास जैसे जानबूझकर किसी ऐसी चीज़ का उपयोग करना जिससे बिना किसी शरिया बहाने के रोज़ा टूट जाता है।
- 2) इस्लाम ने जिन चीज़ों को हराम करार दिया है, उनसे रमज़ान के पूरे महीने में सख्ती से बचना चाहिए, जैसे: झूठ बोलना, अश्लीलता, झूठी गवाही, चुगली करना, संगीत, नृत्य, लड़ाई, गाली-गलौज, बहुदेववाद, नवीनता, सभी वर्जित चीज़ें, अनैतिकता, अनैतिकता, अविश्वास, बहुदेववाद, पाखंड और नवीनता।

विरोध, बुराईयाँ, आदाब (शिष्टाचार) और निषेध (रोकटोक)।

- 1) प्रार्थना में सती
- 2) सारी रात जागना और पूरे दिन सोना, और नींद के कारण सामूहिक प्रार्थना न करना
- 3) पूजा, पाठ, धिक्कार और प्रार्थना न कर पाने के कारण रोज़ा छोड़ना
- 4) सुहूर न करें, रात भर खाएं-पिएं और फज़्र की नमाज़ के समय सोएं
- 5) इफ्तार में सुस्ती और सूर्यास्त के बाद देर से रोज़ा खोलना
- 6) प्रार्थना-पद्धति को विकृत करना
- 7) सामूहिक प्रार्थना का आयोजन न करें

इन चीज़ों से नहीं टूटता रोज़ा

1. खाना-पीना भूल जाओ
2. अगर कोई हमें रोज़े के दौरान खाने-पीने के लिए मजबूर करता है, अगर हम इसका विरोध करते हैं तो जान जाने का खतरा हो तो रोज़ा नहीं टूटता। रोज़े में भूल-चूक माफ़ है।

﴿رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِن نَّسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا﴾ (البقرة: 286)

अनुवाद:

"ऐ हमारे रब! अगर हम भूल जाएं या गलती कर बैठें, तो हमें न पकड़।"

﴿وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ وَلَكِنْ مَا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ﴾ (الأحزاب: 5)

अनुवाद:

"समाप्ति भूल-चूक में जो कुछ हो जाए, उसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं, लेकिन गुनाह वह है, जिसे दिल से करने का इरादा रखा जाए।"

अरकान-ए-सियाम (रोज़े के स्तंभ)

1) 1 इरादा दिल से

- ❖ नहीं रोजा सिर्फ अल्लाह की रजा के लिए रखना
- ❖ कर्म का इरादा पूजा के प्रकारों में भेद नहीं है) हर अच्छे काम का इरादा दिल से होता है
- ❖ मगरिब से फज्र तक इरादा करना अनिवार्य उपवास के लिए एक शर्त है, जबकि अगर उसने फज्र के बाद उपवास नहीं किया है तो नफिल उपवास दिन के किसी भी हिस्से से शुरू किया जा सकता है।

2) सुहूर से लेकर इफ्तार तक रोजा तोड़ने वाली हर चीज से परहेज करना जरूरी है।

रोज़ा किस पर फर्ज है और कब?

- 1) अल-मुस्लिम/इस्लाम - मतलब अविश्वासी पर कोई दायित्व नहीं -
- 2) अल-अक़ल / अक़ल - यानी मजनून पर वाजिब नहीं
- 3) वयस्कता/यौवन - का अर्थ है नाबालिग पर कोई दायित्व नहीं
- 4) अल-कादिर / आपके पास उपवास करने की शक्ति है। वह व्यक्ति जो किसी शरीयत बहाने के कारण बूढ़ा और विकलांग है: रोज़ा अनिवार्य नहीं है
- 5) सही/स्वस्थ का मतलब गंभीर रूप से बीमार नहीं है
- 6) ओह अल-मकीम/इक्राम-ए-मुज़िर का मतलब यात्री नहीं है
- 7) उन लोगों के लिए रोज़ा रखना जायज़ नहीं है जो मासिक धर्म/मासिक धर्म से नहीं गुजर रहे हैं।
- 8) गैर-निफ़ास (निफ़ास की हालत में नहीं) / निफ़ास की हालत में रोज़ा रखना जायज़ नहीं है
- 9) स्तनपान न कराना (यदि स्तनपान कराने वाली महिला को डर हो कि उसका स्वास्थ्य या उसके बच्चे का स्वास्थ्य खतरे में है तो उसे उपवास नहीं करना चाहिए)

10) गैर-गर्भवती गर्भावस्था की एक अवस्था जिसमें उपवास से मृत्यु का खतरा होता है)

11) (इब्र उसैमीन - रमज़ान मजलिस)

- ❖ कुछ शर्तें हैं जो रोज़ा को अनिवार्य नहीं बनाती हैं, और यदि कोई इसका पालन करता है, तो यह गलत और पाप है: मासिक धर्म और निफ़ास के दौरान रोज़ा रखना वर्जित है।
- ❖ कुछ शर्तें हैं जो उपवास को अनिवार्य नहीं बनाती हैं, लेकिन यदि आप इसे रखना चाहते हैं, तो आप इसे रख सकते हैं, उदाहरण के लिए : नाबालिग, यात्री, महिलाएं (स्तनपान कराने वाली) और गर्भवती महिलाएं, अगर नुकसान गंभीर न हो तो ये सभी उपवास कर सकते हैं।
- ❖ अगर मरीज़ मेहनत बर्दाश्त कर ले तो रोज़ा रखना जायज़ है, अगर कोई मेहनत और नुकसान न हो तो रोज़ा रखना वाजिब है, जैसे मामूली खांसी या सर्दी हो तो।
- ❖ रोज़ा हराम है अगर इससे कष्ट और नुकसान दोनों हो।
- ❖ यदि रोगी बूढ़ा या अशक्त है और मरने में असमर्थ है, यदि वह सक्षम है, तो वह क़ज़ा करेगा, अन्यथा वह फ़िदया अदा करेगा, एक रोज़े के बदले में किसी गरीब व्यक्ति को खाना खिलाएगा। कहलाई (अल-दार कुत्बी/अल-इरवा' 4/21 द्वारा वर्णित)

तर्क 1: अनस (سیدنا انس رضی اللہ عنہ) का कार्य, अल्लाह उस पर प्रसन्न हो सकता है, कि जब वह बूढ़ा हो गया और उपवास नहीं कर सका, तो उसने फिरौती के रूप में 30 गरीबों को खाना खिलाया। स्टेज क्या है? (अल-दार कुत्बी/अल-इरवा' 4/21 द्वारा वर्णित)

तर्क 2: इब्र अब्बास और अली अल-तैयह यतिकुना "गवर्नर" का फतवा। आयत सी इस्तिजदल) अल-बुखारी द्वारा वर्णित (4505)

- ❖ आस्था के बिना उपवास अस्वीकार्य और अमान्य है
- ❖ यह नासमझों का इरादा नहीं है, इसलिए यह अनिवार्य नहीं है।
- ❖ यदि कोई बीमार हो और उसके ठीक होने की उम्मीद हो, तो उसे बाद में रोज़े की क़ज़ा (छूटे हुए रोज़े की भरपाई) करनी होगी। यदि बीमारी से ठीक होने की उम्मीद न हो, तो रोज़े की जगह एक गरीब (मिस्कीन) को भोजन कराना होगा।
- ❖ अगर बीमार व्यक्ति ठीक हो जाता है, तो उसे रोज़ों की क़ज़ा करनी चाहिए। अगर वह मर जाता है, तो उसके वारिस उसकी ओर से रोज़े रख सकते हैं। शेख इब्र बाज़ के अनुसार:

केवल नज़र (मन्नत वाले रोज़े) की क़ज़ा करना संभव है, अन्य रोज़ों की क़ज़ा नहीं की जा सकती। शेख अल्बानी के अनुसार: केवल उतने ही रोज़ों की क़ज़ा की अनुमति है, जितने अनिवार्य (फ़र्ज़) थे।

- ❖ कमजोर (बीमार) और गर्भवती स्त्री कठिनाई के डर से रोज़ा छोड़ दे, तो बाद में उसकी क़ज़ा करनी होगी। अगर रखने की ताकत हो तो (इब्र बाज़ और इब्र उसैमीन)। लेकिन शेख अल्बानी ने कहा कि क़ज़ा नहीं करें, बल्कि फिद्या देंगे। और आयत से और कुछ सहाबा से इस्तिदलाल किया ("وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ")।

इब्र अब्बास और इब्र उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से इस्तिदलाल करते हुए कहा कि क़ज़ा नहीं, एक रोज़े के बदले एक मिस्कीन को खाना खिलाएं। इन दोनों का कोई ख़िलाफ़ नहीं, सहाबा में तो फिर इज्मा (सहमति) हो सकती है। (तमाम मन्नीन) शेख अल्बानी ने तफ़सील से दलील पेश की और इस में कुव्वत है वल्लाहो अअलम। वाज़ेह हदीस है कि आप ﷺ ने फरमाया:

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

"إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى وَضَعَ شَطْرَ الصَّلَاةِ، أَوْ نِصْفَ الصَّلَاةِ - وَالصَّوْمَ عَنِ الْمُسَافِرِ، وَعَنِ الْمُرْضِعِ أَوْ الْحُبْلَى "

وفي رواية

"إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ وَضَعَ عَنِ الْمُسَافِرِ شَطْرَ الصَّلَاةِ، وَعَنِ الْمُسَافِرِ وَالْحُبْلَى وَالْمُرْضِعِ الصِّيَامَ أَوْ الصِّيَامَ "

(وصححه الألباني في صحيح أبي داود: 2083)

नबी ﷺ ने फरमाया:

"बेशक अल्लाह तआला ने आधी नमाज़ माफ़ कर दी, या (यूँ कहें) कि आधी नमाज़ - और रोज़ा मुसाफ़िर से, और दूध पिलाने वाली (स्त्री) या गर्भवती स्त्री से।" और एक रिवायत में:

"बेशक अल्लाह ने मुसाफ़िर से आधी नमाज़ माफ़ कर दी, और मुसाफ़िर, गर्भवती और दूध पिलाने वाली से रोज़ा या रोज़ा माफ़ कर दिया।"

(शेख अल्बानी ने इसे सहीह करार दिया, सहीह अबू दाऊद: 2083)

इसका तर्क यह है कि मुसाफ़िर के रोज़े की क़ज़ा का ज़िक्र सूरह अल-बक्रा की आयत नंबर

186 में आ गया है, जबकि दूध पिलाने वाली (मर्ज़िआ) और गर्भवती (हामिला) स्त्री के रोज़े की क़ज़ा का कोई ज़िक्र नहीं किया गया और न ही उन्हें बीमार (मरीज़) की श्रेणी में रखा गया, शेख अल्बानी ने इस पर चर्चा की।

दया का एक पहलू है। कभी-कभी कुछ महिलाओं के लिए, गर्भावस्था और स्तनपान की कठिनाइयों के लिए फ़िद्या 10 वर्षों की तुलना में आसान है, फिर भी, अगर कोई शेख इब्न बाज़ और शेख इब्न तैमिन के फतवे और बीमार और गर्भवती महिलाओं के लिए उनके स्पष्टीकरण से संतुष्ट है, तो वे इसे कर सकते हैं और इसे करना चाहते हैं, लेकिन शेख अल-अल्बानी की राय, भगवान उस पर दया कर सकते हैं, बेहतर और अधिक अनुकूल है। ईश्वर जानता है

किस स्थिति में रोज़ा छोड़ा जा सकता है?

- 1) बीमारी
- 2) यात्रा (सफ़र)
- 3) मासिक धर्म (हैज़)
- 4) प्रसव के बाद का रक्तस्राव (निफ़ास)
- 5) अत्यधिक कमजोरी
- 6) जीवन बचाने की स्थिति (जैसे डूबते हुए व्यक्ति को बचाने के लिए)
- 7) अत्यधिक भूख या प्यास जिससे जान को खतरा हो
- 8) आत्मरक्षा की स्थिति (जान बचाने के लिए)

उपवास का शिष्टाचार

- 1) सुहूर में जितना हो सके खाएं और पिएं, अधिमानतः खजूर या कम से कम पानी
- 2) सुहूर में देरी करना बेहतर है
- 3) समय होते ही व्रत तोड़ देना बेहतर है
- 4) पके खजूर (रतिब), नरम खजूर (तमर) या पानी
- 5) पहली बार व्रत तोड़ने के लिए
- 6) सुहूर से इफ्तार तक का वक्त दुआ कबूल करने का वक्त है
- 7) रोजेदार को रोज़ा खुलवाना बड़े सवाब का काम है
- 8) इफ्तार और सुहूर तोड़े बिना रोज़ा रखना सही नहीं है

- 9) अनेक उल्लेख
- 10) कुरान पढ़ना
- 11) कुरान याद करना
- 12) कुरान को समझना
- 13) प्रार्थना
- 14) नफ़ल प्रार्थना
- 15) प्रसवोत्तर दान
- 16) उमरा
- 17) हर मुसलमान को बाहरी या अंदरूनी पीड़ा पहुंचाकर रुकना
- 18) जमात के साथ तरावीह
- 19) गरीबों और जरूरतमंदों को सहायता करने के लिए
- 20) अपनी सर्वोत्तम क्षमता से लोक कल्याण कार्य करना

मुबाहत अल-सूम (उपवास के दौरान निम्नलिखित चीजें अनुमेय हैं):

- 1) सिर पर पानी डालना
- 2) पानी में उतरो
- 3) नहाना
- 4) सिर पर गीला कपड़ा रखें
- 5) शीर्षक
- 6) चुंबन ((पति और पत्नी)/बुजुर्गों के लिए यह उसके लिए जायज़ है जिसे कोई समस्या है।)
- 7) चिकित्सीय इंजेक्शन (कोई पोषण नहीं)
- 8) मिस्वाक
- 9) कर्पिंग
- 10) मुंह और नाक में पानी लें लेकिन अति न करें
- 11) वे सभी चीजें जायज़ हैं जिनसे बचना मुश्किल है जैसे लार निगलना, सड़क की धूल अगर नाक से गुज़रती है, हवा में उड़ना। धूल
- 12) अगर पति की नाराजगी का गंभीर खतरा हो तो नमक चखकर थूक दें
- 13) मंजन या टूथपेस्ट जिसका स्वाद गले में चला जाए उसे पीले, नीम या माउथवॉश (इब्र सीमिन रहिमहुल्लाह) के इस्तेमाल के बजाय कुल्ला करना चाहिए, अल्लामा इब्र जिब्रीन

रहिमहुल्लाह ने इसे इस शर्त पर अनुमति दी कि यह गले के पार न हो, और उन्होंने यह भी कहा कि सावधान रहें और मसवाक का उपयोग करें।

- 14) सुगंध सूँघो
- 15) गले में मसालों का असर महसूस होना
- 16) गंध का असर महसूस होना
- 17) शरीर पर तेल या मलहम लगाना
- 18) पट्टी बांधना
- 19) इत्र या परफ्यूम लगाएं
- 20) मजबूरी में इनहेलर का इस्तेमाल किया जा सकता है
- 21) कोई कंजेशन बाम नहीं
- 22) मगरिब से भोर तक खाना-पीना और संभोग करना
- 23) सलात अल-फज्र से पहले, किनारे पर रहें
- 24) खाना-पीना भूल जाओ
- 25) मजबूरी में परीक्षण के लिए रक्त दान करना (शेख बिन बाज़, भगवान उस पर दया कर सकते हैं), ने कहा कि हिजामा करना है या नहीं, इस मुद्दे पर पक्षों के तर्कों में ताकत है, इसलिए एहतियात यह है कि यदि कमजोरी हो और उपवास तोड़ने का समय हो, तो इसे रात तक के लिए स्थगित कर दें। दो, इसी तरह रक्त परीक्षण)
- 26) दांत निकालने से गले से रक्त नहीं निकलना चाहिए। व्रत के दौरान इसे बाहर न निकालें
- 27) आंख और कान की दवा
- 28) अनजाने में कुछ हिलना जैसे: गुब्बारा, मधुमक्खी, मच्छर आदि
- 29) बिना अधिकार और बिना जानकारी के भूलने से कोई ऐसा काम करना जिससे रोज़ा टूट जाए उपवास के घृणित कार्य

"रोज़े के मकरूहात" (रोज़े के दौरान नापसंद किए जाने वाले कार्य)

- 1) मुंह और नाक में पानी लेते समय सावधानी न बरतें
- 2) मंजन का उपयोग करते समय बुरी सावधानियां या सती का प्रयोग न करें ताकि इसका प्रभाव गले तक पहुंच जाए
- 3) (युवक के लिए वासना जगाने वाला चुंबन वर्जित है, कंडोल की शर्त पर अनुमति)
- 4) गाली-गलौज से बचने की कोशिश न करना, वैकल्पिक माफ़ी वैकल्पिक है, लेकिन इससे

बचने की कोशिश न करना घृणित है।

- 5) .बुरी नज़र, बुरी नज़र, बुरी वाणी और नंगा मिलन वर्जित है।)
- 6) भोजन को अनावश्यक रूप से चखना
- 7) मुंह में कोई चीज लेकर खेलना ताकि उसका असर गले तक न पहुंचे
- 8) वसल मकरूह और वसल हरम

"मुस्तहब्बात रोज़ा" (रोज़े के पसंदीदा और अनुशंसित कार्य)

- 1) सलाफ़ और अबरार के गुणों को अपनाएं
- 2) व्यर्थ की गपशप में समय बर्बाद न करें
- 3) कुरान का पाठ तालुक अल-अली का साधन है
- 4) ज्ञान और कार्य में सलफ़ के मार्ग का पालन करें, सच्चाई और धैर्य, व्याख्या और सुन्नत और समझ के साथ तवासी।

मुप्सिदात व मुब्तिलात रोज़ा" (रोज़ा तोड़ने वाले और रोज़े को निष्फल करने वाले कार्य)

- 1) भोजन करना जानबूझकर, वैकल्पिक (ज्ञान और स्मरण दोनों) है।
- 2) जानबूझकर, स्वेच्छा से पीना (जानबूझकर और याद करके)
- 3) असामान्य मार्ग से अंतर्ग्रहण, जैसे नाक से गले तक पानी का बहना
- 4) आहार इंजेक्शन और ग्लूकोज से उपवास टूट जाता है (इंजेक्शन से उपचार से उपवास नहीं टूटता)।
- 5) जानबूझकर ऐसा कर रहे हैं
- 6) माहवारी
- 7) निफ़ास
- 8) हस्तमैथुन और संभोग

इस्तम्ना: इस मसले में एक अंतर है, इब्र हज़र और शेख अल-अल्बानी ने कहा कि रोज़ा नहीं टूटेगा, लेकिन गुनाह दर्ज किया जाएगा। (तमाम अल-मिन्ना)

- 9) कुछ विद्वानों के अनुसार हिजामा से रोज़ा टूट जाता है और कुछ के अनुसार नहीं, क्योंकि अनस के अनुसार हिजामा से रोज़ा तोड़ने से रोज़ा टूट जाता है। आखिरी बात यह थी कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फैसला किया कि हिजामा से रोज़ा नहीं टूटता। साहिह बुखारी)

इस पर शेख बिन बाज़ रहिमहुल्लाह ने कहा कि हिजामा करने या न करने के मामले में पक्षों की दलीलों में ताकत है, इसलिए एहतियात यह है कि अगर कमजोरी हो और रोज़ा तोड़ने का समय हो तो रात तक इसे टाल दें।

संकट:

(रक्तदान) का भी आदेश हिजामा ने दिया था की तरह है कि अगर यह कम मात्रा में हो और कमजोरी न हो तो रोज़ा नहीं टूटता, लेकिन अगर यह ज्यादा मात्रा में हो और कमजोरी हो तो सावधानी से कजा करें। (इब्र उसैमीन)

और एक और मुद्दा:

रक्त परीक्षण के लिए सामान्य रक्त बूँदे इसे रोजेदार के शरीर से निकालकर शेख यिन बाज़ ने माफ कर दिया, इससे रोजे पर कोई असर नहीं पड़ता

और एक समस्या अगर अनजाने में खून बह जाए या चाकू से कुछ काटते समय शरीर से खून निकल आए तो रोज़ा नहीं रहेगा। भले ही यह बड़ी मात्रा में टूटा हुआ हो (इब्र उसैमीन)। द्वारा इब्र बाज़)

नोट:

किसी की जान बचाने के लिए मजबूरी में ऐसा करना जायज़ है और अगर वह रोज़े की हालत में है तो भी रोज़ा तोड़ सकता है और बाद में इसकी भरपाई कर सकता है (इब्र बाज़, ईश्वर की इच्छा)। रक्तदान

- 1) क्या ये जिज़ा मफ़सादात सूम में गिने जाते हैं? : एनेस्थीसिया, शुगर का इंजेक्शन, डायलिसिस (किडनी के लिए)

नोट 1. दवा या कुछ और निगलने से बेहोशी आना यह आघात या दुर्घटना, या सुइयों या चिकित्सा इंजेक्शन या सूँघने के कारण बेहोशी के कारण नहीं है। तो रोज़ा पूरा करो (इब्र कुदामा)

अगर कोई पूरे रमज़ान में होश में नहीं है तो रोज़ा फर्ज़ नहीं है, इसलिए समझदार की हालत पर भी विचार नहीं किया जा सकता।

नोट 2. शुगर का इंजेक्शन इलाज माना जाता है, इसलिए रोज़ा नहीं टूटता

टिप्पणी डकलास में, सामान्य रूप से पौष्टिक दवाओं के उपयोग के कारण उपवास

तोड़ने का फतवा दिया गया था, यदि कोई विधि उपचार का एक रूप साबित होती है और केवल तन्कियाह अल-अद्म (रक्त की शुद्धि) का मतलब ताकत या भोजन नहीं है, तो उपवास नहीं टूटेगा (इब्र उथैमीन संग्रह)। (113/20)

- 2) जान-बूझकर भोजन के अलावा कुछ भी गले के नीचे डालना
- 3) सूर्यास्त हो गया है यह सोचकर रोजा तोड़ दिया, लोगों के अनुसार यह कजा है लेकिन कुछ के अनुसार नहीं
- 4) नास्त इफ्तार (कुछ के लिए)
- 5) धर्मत्यागी का व्रत टूट गया, भगवान न करे
- 6) नियम या शर्तें स्थापित नहीं करना

प्रार्थनाएँ विशेषकर रमज़ान

- 1) सहरी
- 2) अर्धचंद्र का दर्शन और प्रार्थना
- 3) उपवास
- 4) पीछे हटना
- 5) पिछले दशक की अजीब रातों में लैलात-उल-क्रद्र की तलाश में
- 6) क्रियाम अल-लैल
- 7) इफ्तार
- 8) दशक के अंत की एक विशेष व्यवस्था
- 9) कुरान का पाठ करना और समझना
- 10) दान और ज़कात की प्रचुरता (यदि पाठ्यक्रम और वर्ष पूरा हो गया हो)
- 11) प्रार्थना
- 12) ज़कात अल-फितर
- 13) ईद-उल-फितर की व्यवस्था
- 14) निषेध और घृणा और व्यर्थता से बचना (वासना और अधिकता से बचना)।
- 15) शरीयत के आधार पर रोज़ा न रखना, बिना उज़्र के आलस्य -
- 16) समय से पहले व्रत तोड़ने से बचें

खंडन और विरोध

- 1) अपरिग्रह (उपवास के नियमों और समस्याओं का पालन करना)। मत करो)
- 2) अभद्रता
- 3) फिज़ूलखर्ची और फिज़ूलखर्ची
- 4) प्रार्थना में अतिशयोक्ति
- 5) खाने और रहने में दिक्कत
- 6) सारी रात जागना और भोर को सोना
- 7) पूरे दिन बिना प्रार्थना किए सोएं
- 8) व्यर्थ में समय बर्बाद करना
- 9) कुरान से दूरी
- 10) प्रार्थना की व्यवस्था न करें
- 11) अज़कार का आयोजन न करें
- 12) नियम-शर्तों और नियमों की परवाह न करें
- 13) सामूहिक प्रार्थना के साथ सती होना
- 14) तरावीह जल्दी खत्म करें

रोजे की हराम और हलाल तक़सीम

1. रोज़ा रखना अनिवार्य है

- ❖ रमज़ान का रोज़ा रखना
- ❖ कदा रमज़ान
- ❖ प्रायश्चित्त के व्रत
- ❖ मन्नतों का व्रत
- ❖ हज यात्री का रोज़ा (हादी)। (यदि जानवर नहीं है)

2. अनुशंसित उपवास:

- ❖ सवाम आशूरा - मुहर्रम की 10वीं तारीख को रोज़ा रखना (इसके साथ मुहर्रम की 9वीं तारीख का रोज़ा रखना बेहतर है)
- ❖ अरफ़ा के दिन रोज़ा रखना
- ❖ ज़िलहिज्जा 1 से 9 तक रोज़ा रखना
- ❖ सोमवार एवं गुरुवार का व्रत करें
- ❖ ओव्यूलेशन दिन (13वें, 14वें, 15)

- ❖ शव्वाल के छह रोजे
- ❖ शाबान के पहले भाग में रोज़ा रखना
- ❖ मुहर्रम का रोज़ा
- ❖ सोम दाउद एक दिन उपवास एक दिन साँप)

3. घृणित उपवास:

- ❖ केवल शनिवार या शुक्रवार को उपवास करना अहितकर है
नोट: शेख अल-अल्बानी, भगवान उस पर दया करें, इसे हुराम कहते हैं।

4. उपवास वर्जित है

- ❖ ईद - उल - फितर
- ❖ ईद अल-अधा
- ❖ तश्रीक के दिन
- ❖ संदेह
- ❖ मासिक धर्म के दौरान उपवास

5. रोज़ा रखना जायज़ है

- ❖ सभी नफ़ल रोजे रखते हैं (विवरण के लिए देखें: अल-शरह अल-मुमता: 6/457-483)

6. रमज़ान और माजिद

- 1) इस इरादे को शुद्ध करना कि जो कुछ कहा या किया गया है वह केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिए है (अराफ़: (29)
- 2) हर हाल में सुन्नत पर अमल करने की कोशिश करें।
- 3) मस्जिद बनाने का मकसद अल्लाह की इबादत, याद, तिलावत और इल्म सीखना, शरीयत द्वारा इजाज़त हर फायदेमंद काम और शरीयत द्वारा हुराम किए गए हर काम से बचना है। (पश्चाताप: 18)
- 4) मस्जिद किसी भी साफ़ जगह पर बनाई जा सकती है.
- 5) घर में महिलाओं के लिए एक सामान्य प्रार्थना कक्ष और प्रसवोत्तर प्रार्थना के लिए पुरुषों के लिए एक प्रार्थना कक्ष होना चाहिए, जिससे घर स्वतः ही पवित्रता और स्वच्छता का केंद्र बन जाएगा। (मुस्लिम: 778)
- 6) मस्जिद का नाम भी इस्तेमाल किया जा सकता है लेकिन पाखंड का इरादा नहीं होना चाहिए (बुखारी: (420)

- 7) मस्जिद बनाने का सवाब यह है कि स्वर्ग में घर बनेगा, वह ईमान की निशानी होगी है, इनाम जारी है लेकिन शुद्ध हलाल धन होना (इब्ने माजा: 735)
- 8) मस्जिदों की देखभाल का महत्व: मस्जिद कुबा, मस्जिद नबवी का निर्माण, आपने और मैंने एक मजदूर की तरह मस्जिद के निर्माण में भाग लिया, अल्लाह के पैगंबर ने हर पड़ोस में एक मस्जिद के निर्माण का आदेश दिया।
- 9) पुरुषों के लिए मस्जिद में बिना किसी उज्र के हर अनिवार्य नमाज अदा करना अनिवार्य है।

मस्जिद के गुण

- 1) अल्लाह ने उसे अपना घर कहकर उसका सम्मान किया है
- 2) मस्जिदें जन्नत के बगीचे हैं (तिर्मिधि: 3510)
- 3) मस्जिदें धरती पर अल्लाह की पसंदीदा जगह हैं
- 4) मस्जिद शांति और सुरक्षा का स्थान है (बुखारी: 451)
- 5) मस्जिदें आसमान से लेकर फरिश्तों तक सितारों की तरह चमकती नजर आती हैं (मज्म अल-जावैद: 1934)।
- 6) आस्तिक को मस्जिद में शांति मिलती है (सहीह)।
- 7) मस्जिद में सामूहिक रूप से प्रार्थना करने का सवाब घर पर प्रार्थना करने से 25 या 27 डिग्री अधिक है (बुखारी: 648)
- 8) मस्जिद में चालीस दिनों तक तकबीर औली की नमाज़ पढ़ने से इंसान पाखंड और नरक से मुक्त हो जाता है (तिर्मिज़ी: 241)।
- 9) जो कोई भी मस्जिद में फज्र की नमाज अदा करता है वह अल्लाह की सुरक्षा में आता है (मुस्लिम: 657)।
- 10) जो व्यक्ति मस्जिद में जमाअत के साथ फज्र और ईशा की नमाज पढ़ता है उसे पूरी रात रुकने का सवाब मिलता है
- 11) मस्जिदों से प्यार करना अनिवार्य है (मुस्लिम: 671)
- 12) जो कोई भी मस्जिद से दिल से रिश्ता रखता है, उसे क़यामत के दिन ईश्वर के सिंहासन की छाया मिलेगी, जब कहीं कोई छाया नहीं होगी (बुखारी: 660)

मस्जिद की सफाई का आयोजन

- 1) मस्जिद को साफ़ रखें (तिर्मिज़ी: (594)
- 2) इसे सूँघो (अबू दाऊद: (455))
- 3) यदि आपको मस्जिद में कुछ भी अवांछनीय दिखाई दे इसे साफ़ करो (बुखारी: (405)
- 4) जैसे आप घर को व्यवस्थित करते हैं वैसे ही मस्जिद को भी व्यवस्थित करें (सहीह अनुनय: 330)
- 5) मस्जिद की सफ़ाई करने वाली महिला को अंतिम संस्कार की प्रार्थना के माध्यम से पैगंबर द्वारा विशेष रूप से सम्मानित किया गया था 956: बुखारी: 458, मुस्लिम)
- 6) मस्जिद में किसी भी मात्रा में गंदगी साफ करने से कर्म मजबूत होते हैं और पुनरुत्थान के दिन अच्छे कर्म के रूप में दिखाई देंगे, इसके विपरीत, पाप समान हैं। (मुस्लिम: (553)

मस्जिद में आने का सवाब

- 1) अल्लाह ताला मस्जिद में आने वाले हर व्यक्ति को सम्मान और सम्मान प्रदान करता है (सहीह अल-तुर्घिब: 322)।
- 2) उन्हें स्वर्ग में भी सम्मानित किया जाएगा (बुखारी: (662)।
- 3) हर कदम पर एक गुनाह माफ़ किया जाएगा और एक नेकी लिखी जाएगी (इब्न हिब्बन: 2039, हसन)।
- 4) घर से वजू करके मस्जिद में आने वाले नमाजी के हर कदम पर दस नेकियां लिखी होती हैं। (साहिह अल-तुर्गीब: 298)
- 5) एक स्तर पर एक कदम ऊपर (मुस्लिम: (666)
- 6) लंबी दूरी से आने वालों के लिए बहुत सी सीढ़ियाँ इनामों की बहुलता (बुखारी: (651)
- 7) मस्जिद में अच्छा स्नान और सामूहिक प्रार्थना क्षमा की गारंटी है (साहिह अल-तुर्घिब: 299)।
- 8) मस्जिद तक चलना और एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ तक इंतज़ार करना बीच में किए गए पापों का प्रायश्चित है (इब्न माजा: (428)
- 9) जो कोई घर से वुजू और वाजिब नमाज़ अदा करने की नियत से मस्जिद में आएगा, उसके लिए हज़ 558 का इनाम: अबू दाऊद होगा।

- 10) मस्जिद में जाना, मस्जिद में एक नमाज़ के बाद अगली नमाज़ का इंतज़ार करना, जो कड़ाके की ठंड में पूर्ण स्नान करेगा, वह अच्छा जीवन व्यतीत करेगा और अच्छा अंत करेगा और पाप से मुक्त हो जाएगा क्योंकि माँ ने आज ही जन्म दिया है। (टैंडी: 3234)
- 11) देवदूत उन लोगों की गवाही देते हैं जो फज़्र और अस्त्र की नमाज़ के लिए मस्जिद में आते हैं। (बुख़ारी: (555))
- 12) अल्लाह मस्जिद में आने वाले बंदे से उतना ही प्रसन्न होता है जितना किसी खोए हुए व्यक्ति के वापस आने से प्रसन्न होता है (इब्र माजा: (800))
- 13) यदि वह मस्जिद जाते समय मर जाए तो स्वर्ग जाएगा, और यदि लौट आए तो इनाम का अधिकारी होगा
- 14) जो लोग रात के अंधेरे में मस्जिद में आते हैं, उन्हें क़यामत के दिन अल्लाह सर्वशक्तिमान से इस स्थिति में मिलेगा कि उनके चारों ओर रोशनी फैल जाएगी। (सहीह अल-तरगीब: 318)
- 15) जो लोग अत्यधिक ठंड और अंधेरे में मस्जिद में आते हैं, उनके लिए घर जिन और शैतानों से मुक्त होता है (सहीह शृंखला: 3036)
- 16) मस्जिद तक पैदल चलने से बाकी धर्म की भी रक्षा होती है। (मुस्लिम: 251)
- 17) जो कोई भी जमात की नियत से आता है वह जमात का इनाम नहीं खोता। (अबू दाऊद: 564)

मस्जिद में इंतज़ार करने का सवाब

- 1) अल्लाह को उस बंदे पर नाज़ और गर्व है जो मस्जिद में बैठकर नमाज़ का इंतज़ार करता है (801) इब्र माजा
- 2) निरंतर प्रार्थना का प्रतिफल (नासाई: 735)
- 3) आज्ञाकारियों और उपासकों के बीच नाम लिखे गए (साहिह अल-तुर्गीब: 298)
- 4) देवदूत उस समय तक प्रार्थना स्थल पर बैठे थे क्षमा के लिए प्रार्थना करते रहें। (मुस्लिम: 649)
- 5) यहां तक कि अगर आप फज़्र की नमाज़ के बाद सूर्योदय तक मस्जिद में बैठते हैं और धिक्कार पढ़ते हैं, तो यह नमाज़ पर बैठने के इनाम के लिए कोई शर्त नहीं है और सलात-अल-

इशराक पढ़ने से आपको हज और उमरा का इनाम मिलेगा।

- 6) जो व्यक्ति मस्जिद में अधिक समय बिताता है, उसे अल्लाह दया, दया और सही रास्ते पर दृढ़ता का आशीर्वाद देगा (साहिह अल-तुर्घिब: 330)।

जो लोग ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से मस्जिद में आते हैं

- 1) फ़रिश्तों का प्यार पाया जाता है (सहीह प्रेरणा: 71)
- 2) हज एक इनाम है (2700): स्कैन (मुस्लिम)
- 3) सकीनत (मुस्लिम: 2700)
- 4) दया (मुस्लिम) (2700):
- 5) फ़रिश्ते साहित्य करते हैं (मुस्लिम: 2700)
- 6) अल्लाह ने फ़खरिया का उल्लेख किया है (मुस्लिम: 2700)
- 7) जन्नत पाना आसान है (मुस्लिम: 2699)
- 8) अल्लाह की राह पर चलने का सवाब है
- 9) दुनिया की सारी नेमतों से ज़्यादा इनाम (803)

मस्जिद में आने और जाने का शिष्टाचार

- 1) फटे हुए कपड़े (अराफ़: 31)
- 2) उनकी प्रतिष्ठा (अल-अराफ़: 31)
- 3) लीन और चमकीला न हो जो नशीला हो
- 4) वस्त्र पूरक (अराफ़: 31)
- 5) साफ़ (मुस्लिम: 91)
- 6) खुशबू (मुस्लिम: 91)
- 7) प्रमुख वस्त्र (मुस्लिम: 91)
- 8) यह सफ़ेद हो तो बेहतर है (तिर्मिज़ी: 994)।
- 9) फूलदार और पैटर्न वाले से बचें।
- 10) मस्जिद में प्रवेश करते समय दाहिना पैर पहले रखें और बायां पैर पहले छोड़ दें (बुखारी, उनसे जुड़ी संचरण श्रृंखला के साथ: (426))

11) मस्जिद में प्रवेश करते समय यह दुआ पढ़ें:

بِسْمِ اللَّهِ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ، اللَّهُمَّ افْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ (صحيح مسلم:

(1652)

"बिस्मिल्लाह, और सलात और सलाम हो अल्लाह के रसूल पर।
ऐ अल्लाह, मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।" (सहीह मुस्लिम: 1652)

12) मस्जिद से निकलते समय यह दुआ पढ़ें:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ (صحيح مسلم: 1652)

अनुवाद: "ऐ अल्लाह, मैं तुझसे तेरे फ़ज़ल (कृपा) का सवाल करता हूँ।"

(सहीह मुस्लिम: 1652)

13) ताहिया अल-मस्जिद लगभग अनिवार्य है

14) कच्चा लहसुन या प्याज खाकर या किसी अन्य अप्रिय गंध के बाद मस्जिद में न आएँ (855):
ऐ (बुखारी)

15) जहाँ भी बैठने की जगह हो, वहाँ गर्दन क्रॉस न करें

16) मस्जिद में अज़ान सुनने के बाद बिना किसी वैध बहाने के मस्जिद से बाहर न निकलें
(मुस्लिम: 655)।

17) यदि कोई किसी आवश्यकता के कारण अपनी जगह से उठकर चला जाता है तो लौटने पर
वह उस जगह का अधिक हकदार होता है

18) साफ़ जूतों में नमाज़ पढ़ना सही है, लेकिन इसका मतलब ऐसे जूते हैं जो सख्त तलवों के
बिना नरम चमड़े से बने होते हैं। होना (बुखारी: 386)

Free Online Islamic Encyclopedia

मस्जिद और महिलाएं

1) महिलाओं का मस्जिद में आना वाजिब नहीं है (अहमद: 8796)

2) महिलाएं मस्जिद में जा सकती हैं (अबू दाऊद: 567)।

3) देवियों, अपने कपड़ों का खयाल रखें और केलों से भरे न रहो (मुस्लिम: 2128)।

4) इत्र से परहेज़ करें (मुस्लिम: 443)

मस्जिद में अनुमत कार्य

- 1) धर्मशास्त्र सीखना और सिखाना (मुस्लिम: 2700)
- 2) मजबूरी के कारण मस्जिद में लेटना (बुखारी: (421)
- 3) यात्री या जरूरतमंद व्यक्ति के लिए लेटना जायज़ है
- 4) यदि कोई नहीं बैठता है तो बिना स्नान किये मस्जिद में प्रवेश करना जायज़ है। यदि उसे बैठना है, तो उसे स्नान करना चाहिए और ताहिया अल-मस्जिद भी करना चाहिए, क्योंकि ताहिया अल-मस्जिद अनिवार्य के करीब है (बुखारी: (421)
- 5) मस्जिद में खाना जायज़ है (इब्र माजा: 3311)।
- 6) मस्जिद में जनाज़े की नमाज़ अदा करना जायज़ है (973:
- 7) एक गैर-मुस्लिम मस्जिद हरम को छोड़कर किसी भी आवश्यकता के तहत मस्जिद में प्रवेश कर सकता है
- 8) अगर आपको मस्जिद में बैठे-बैठे नींद आ रही है तो अपनी जगह बदल लें इसे लिया जाना चाहिए (अबू दाऊद: 1119)।

मस्जिद में गैरकानूनी मामले

- 1) खरीदना और बेचना (तिर्मिज़ी: (1321)
- 2) खोई हुई चीज़ की उद्धोषणा (तिरंडी: 1321)
- 3) ज़ोर से बोलना (बुखारी: (457)
- 4) मस्जिद में इतनी जोर से पढ़ना दूसरों को कष्ट हो सकता है (अबू दाऊद: 1332)
- 5) मस्जिद में किसी को मामूली दर्द पहुंचाना भी मना है (बुखारी: (452)
- 6) जगह पाने के लिए गर्दन उछालना मना है (अबू दाऊद: 1118)
- 7) क्या किसी धार्मिक उद्देश्य को व्यक्त करने के लिए कविता कहना सही है? साथियों की शायरी उसी प्रकार की है थी (स्त्रीलिंग: 716)
- 8) मस्जिद में थूकना मना है (अबू दाऊद: 474)।
- 9) इस्लाम और मुसलमानों के लाभ के लिए भाषण, बयान, बातचीत की अनुमति है; गैर-धार्मिक व्यर्थ की बातें वर्जित हैं (सहीह शृंखला: 1163)।
- 10) किसी विशेष स्थान को नामित करना निषिद्ध है (अबू दाऊद: 862)।

- 11) एक हाथ की उंगलियों को दूसरे हाथ की उंगलियों से दबाना मना है (इब्र खुज़िमा: 437)
- 12) मस्जिद में शांति और सम्मान के साथ आना चाहिए, जमात में शामिल होने के लिए भागना सख्त मना है
- 13) मस्जिद को सार्वजनिक सड़क बनाना हराम है (सही प्रेरणा: 295)

मस्जिद को वीरान करने की सज़ा (मस्जिद को उजाड़ने की सज़ा)

- 1) कोई काफ़िर मस्जिद नहीं बनाता, और एक आस्तिक मस्जिद का बाहरी निर्माण (अपनी क्षमता के अनुसार निर्माण के माध्यम से) और आंतरिक निर्माण (इबादत के माध्यम से) करता है।
- 2) पार्टी से पिछड़ने वाले के दिल पर सील किया जा सकता है (इब्र माजा: 794)
- 3) जो लोग आलस्य के कारण तीन शुक्रवार को मस्जिद में नहीं आते (अबू दाऊद: 1052)
- 4) आधुनिक निर्माण के लिए मस्जिद को गिराना जायज़ है, लेकिन जो लोग नफरत के कारण इसे गिराते हैं, वे धर्म में बाधक हैं डालने का पाप मिलेगा और कुरान में मस्जिद विध्वंस या उजाड़ या रुकावट को अत्याचारी और अत्याचारी के लिए संसार कहा गया है परलोक में अपमान होता है। (बक्ररह: 114)

मस्जिद की व्यवस्था

- 1) मस्जिद (पुरुषों) में कर्तव्य निभाए जाने चाहिए।
- 2) सभी को मस्जिद की साफ-सफाई का ध्यान रखना चाहिए
- 3) मस्जिद के बाथरूमों की सफ़ाई में भी हिस्सा लें
- 4) पानी, तौलिया, इत्र की व्यवस्था करें
- 5) विद्वानों एवं विद्वानों को बुलाने एवं व्याख्यान आयोजित करने में सहायता करना
- 6) बच्चों और युवाओं के लिए शैक्षिक प्रतियोगिताएँ
- 7) इफ्तार का आयोजन मस्जिद के निचले भाग में किया जाता है
- 8) मस्जिद से ऑडियो, वीडियो, सीडी या किताबों का मुफ्त वितरण
- 9) अपने-अपने घरों से इफ्तार करवाएं और मस्जिद में कभी-कभार खाने की सामूहिक व्यवस्था करें ताकि आपसी प्रेम विकसित हो
- 10) कुरान की तिलावत, खुदा को याद करके और इबादत करके मस्जिद को साफ रखें

- 11) जकात और सदाकत को प्रोत्साहित करना और मस्जिद के माध्यम से गरीबों और जरूरतमंदों की जरूरतों का ख्याल रखना।
- 12) गैर-मुसलमानों को बुलाना और परिचय कराना: रमज़ान क्या है? मस्जिद क्या है? प्रार्थना क्या है? ताकि उनकी गलतफहमी दूर हो जाए

7. रमज़ान और नमाज़

दुआ के फ़ज़ीलत (प्रार्थना के गुण/महत्व)

- 1) दुआ पूजा का वास्तविक कार्य है (अबू दाऊद: 1479)।
- 2) दुआ एक नेक काम है (इब्न माजा: 3829)।
- 3) प्रार्थना से भाग्य बदल जाता है (तिरंजी: 2139)।
- 4) विपत्तियों और आपदाओं से सुरक्षा (तिर्मिधि: 3548)
- 5) नमाज़ अल्लाह की रहमत और कामयाबी का ज़रिया है
- 6) अल्लाह कभी वंचित नहीं करता (अबू दाऊद: 1488)।
- 7) हाथ उठाकर दुआ करना भी मसनून है (अबू दाऊद: 1488)

प्रार्थना का महत्व

- 1) नमाज़ न पढ़ने से अल्लाह नाराज़ हो जाता है।

प्रार्थना का शिष्टाचार

- 1) भगवान की स्तुति करो (सभी स्तुति भगवान के लिए है, दुनिया के भगवान) (तिरंजी: 3476)
- 2) दुरूद और सलाम (प्रार्थना करने वाले के लिए सबसे अच्छा सलाम और सलाम) (तिरंजी: 3476)
- 3) गंभीरता और आग्रहपूर्वक पूछना (सहीह बुखारी: 7477)
- 4) संदेह और लापरवाही से नहीं (तिर्मिज़ी: 3479)।
- 5) पापों की स्वीकारोक्ति और खेद की अभिव्यक्ति (धारा 1653)
- 6) किसी विशेष अवसर पर दुआ को तीन बार दोहराना (इब्न)।

- 7) किसी और के लिए पूछने से पहले अपने लिए पूछें मांगना (तिर्मिज़ी: 3385)
- 8) अल्लाह के पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा सिखाई गई व्यापक प्रार्थनाओं को व्यवस्थित करें, शब्द कम हैं लेकिन अर्थ अधिक हैं (1482) हो (अबू वावर)।
- 9) हाथ उठाना मसनून है. (हाथ उठाना ज़रूरी नहीं है, बिना उठाए भी यह जायज़ है) (अबू दावर: (1488)
- 10) हर छोटी-बड़ी चीज़ अल्लाह से मांगो (तिर्मिज़ी: 3604)
- 11) अक्रिबला (सहीह) की ओर मुंह करके नमाज़ पढ़ना बेहतर है (1763)
- 12) सदैव स्नान करते रहना बड़े सवाब का काम है। (सही

वे शब्द जिनके माध्यम से प्रार्थना स्वीकार की जाती है

1. इसम आज़म (सबसे महान नाम)

الحي القيوم

(ترمذي: 3478، شيخ ابن عثيمين)

अल-हय्युल-कय्यूम (तिर्मिज़ी: 3478, शेख़ इब्न उथैमीन)

2. पवित्र आयत

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي مِنَ الظَّالِمِينَ

(ترمذي: 3505)

"ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्हानक, इन्नी कुन्तु मिन अज़-ज़ालिमीन" (तिर्मिज़ी: 3505)

(अर्थ: "तेरे सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, तू पाक है, मैं वास्तव में ज़ालिमों में से था।")

3. يا ذا الجلال والإكرام

(ترمذي: 3525)

"या ज़ल ज़ल अल-जालालि वल-इकराम" (तिर्मिज़ी: 3525)

(अर्थ: "हे प्रतापी और सम्माननीय!")

4. لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

(صحيح البخاري: 6385)

"ला हौल वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह" (सहीह बुखारी: 6385)

(अर्थ: "अल्लाह के सिवा न कोई ताकत है और न ही कोई शक्ति।")

5. अल्लाह उन लोगों की सभी प्रार्थनाओं को स्वीकार करता है जो कुरान का पाठ करते हैं। (अबू
6. दुरूद की अधिकता से सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं और दुख दूर होते हैं। (तिर्मिज़ी: 2457)

स्वीकृति प्रार्थना समय

- 1) रात का आखिरी हिस्सा (सहीह बुखारी: 1145)
- 2) रमज़ान क्या है? (सहीह अल-तरगीब: (1002)
- 3) रोज़ा तोड़ने के समय (सुनन इब्र माजा (1753))
- 4) (3513) क़द्र की रात (तिर्मिज़ी)।
- 5) अज़ान और इक़ामा के बीच (तिर्मिज़ी: (212)
- 6) सजदे की हालत में (सहीह मुस्लिम: 482)
- 7) शुक्रवार के दिन एक घड़ी (साहिह बुखारी: (935
- 8) अज़ान के बाद (अबू दाऊद: 2540)
- 9) जब बारिश उतरती है (साहिह शृंखला: (1469
- 10) (3585): अराफा का दिन (9) धुल-हिज्जा) (तिर्मिधि)
- 11) ज़मज़म पीते समय (इब्र माजा: 3062)
- 12) समृद्धि के समय दुआ (साहिह शृंखला: (593
- 13) सच्ची तौबा के बाद जब दुआ कुबूल हो जाये (सहीह मुस्लिम: 2759)।

अल्लाह जिनकी दुआएं जल्दी कबूल करते हैं

- 1) उत्पीड़ित (अबू दाऊद 1536)
- 2) यात्री (अबू दाऊद 1536)
- 3) पिता (अबू दाऊद: (1536)
- 4) ग़ाज़ी (इब्र माजेह (2893)
- 5) हज़ और उमरा (इब्र माजा: (2893)
- 6) अपने माता-पिता के पक्ष में धर्मी बच्चों की दुआ (इब्र 3660)

- 7) रोज़ेदार की दुआ (तिर्मिज़ी: 3598)
- 8) उनकी अनुपस्थिति में मुस्लिम भाई की प्रार्थना(2733)

जिनकी दुआ कुबूल नहीं होती

- 1) हराम प्रावधान (साहिह मुस्लिम: 1015)
- 2) पाप और निर्दयता में लिप्त व्यक्ति (सहीह)।
- 3) वह जो बिना लापरवाही के प्रार्थना करता है (तिर्मिज़ी:(3479
- 4) जब तक वह बुरे कर्मों से पश्चाताप नहीं करता (सेर
- 5) जो लोग ``अम्र बि अल-मरुफ़ और नहीं एन अल-मुनकर" (साहिह अल-तग़रिब: 2313) का कर्तव्य नहीं निभाते हैं।

प्रार्थना की अनुमति

- 1) किसी के अनुरोध पर नाम लेकर प्रार्थना करना
- 2) कुनूत नजला पढ़ने के बाद बुरी दुआ करना
- 3) मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना
- 4) अस्मा होस्त्री के माध्यम से प्रार्थना
- 5) वैध साधन (अस्मा हसनी, अच्छे कर्म और एक अच्छे जीवित व्यक्ति से दुआ का अनुरोध)

प्रार्थना की घृणित बातें

- 1) प्रार्थना में कविताएँ, शब्दों का भार दर्द से चुकाना चाहिए
- 2) प्रार्थना में अनावश्यक बातें
- 3) दुनिया में सज़ा पाने की प्रार्थना कर रहा हूँ
- 4) अपने लिए, अपने बच्चों के लिए, अपने नौकरों के लिए और अपनी संपत्ति के लिए प्रार्थना करना
- 5) मौत के लिए प्रार्थना कर रहे हैं
- 6) दया और पाप के लिए प्रार्थना
- 7) प्रार्थना में जल्दबाजी करना
- 8) नमाज़ पढ़ते समय अवैध साधन अपनाना या शिर्क और विधर्म का सहारा लेना

9) विशिष्ट मसनून प्रार्थनाओं का आदान-प्रदान

दुआ क़बूल होने के तरीके (प्रार्थना स्वीकृत होने के रूप)

- 1) ईमानदारी और सुन्नत से मांगी गई दुआ कभी खारिज नहीं होती
- 2) कोई भी विपत्ति टल जाती है
- 3) और कभी-कभी परलोक की सफलता के लिए भी स्टॉक बनाया जाता है) 11133: सहीह अल-तरगीब: 1633, अहमद)

पश्चाताप और क्षमा

- 1) पश्चाताप का अर्थ है आज्ञाकारिता की स्थिति में लौटने की प्रतिबद्धता बनाना
- 2) क्षमा का अर्थ है अल्लाह से अपने पापों को दूर करने के लिए प्रार्थना करना
- 3) इस्तिग़फ़ार का अर्थ है अल्लाह से अपने पापों की माफ़ी और माफ़ी मांगना है
- 4) स्वीकारोक्ति और पश्चाताप
- 5) पश्चाताप मृत्यु तक स्वीकार किया जाता है और सूर्य पश्चिम से उगता है।
- 6) मनुष्य कितना उत्तम तपस्वी है
- 7) नबी या करीम से उन लोगों के लिए अच्छी खबर है जो अक्सर माफ़ी मांगते हैं
- 8) मृत माता-पिता के लिए प्रार्थना करना भी उनके लिए फायदेमंद होता है
- 9) जो सुबह और शाम सैय्यद अल-इस्तिग़फ़र पढ़ता है वह स्वर्ग है।
- 10) अगर तौबा का ताल्लुक किसी गुनाह से है जो मख़लूकों के हक़ से ताल्लुक रखता है तो मख़लूकों का हक़ अदा करना और फिर तौबा करना ज़रूरी है।

रमज़ान की विशेष दुआएँ:

क्रिसेंट के दिखने की दुआ/चाँद देखने की दुआ" (नया चाँद देखने पर पढ़ी जाने वाली प्रार्थना)

दुआ नंबर: 1

اللَّهُمَّ أَهْلُهُ عَلَيْنَا بِالْيَمِينِ وَالْإِيمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْإِسْلَامِ رَبِّي وَرَبُّكَ اللَّهُ

"ऐ अल्लाह! इस चाँद को हम पर बरकत, ईमान, सुरक्षा और इस्लाम के साथ प्रकट कर। (ऐ चाँद!) मेरा और तेरा रब अल्लाह है।" (तिर्मिज़ी: 3451)

दुआ नंबर:2

اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُمَّ أَهْلُهُ عَلَيْنَا بِالْأَمْنِ وَالْإِيمَانِ، وَالسَّلَامَةِ وَالْإِسْلَامِ، وَالتَّوْفِيقِ لِمَا نَحِبُّ وَتَرْضَى، رَبَّنَا
وَرَبُّكَ اللَّهُ - (الكلم الطيب: 162، صحيح بخاري)

"अल्लाह सबसे बड़ा है! ऐ अल्लाह! इस चाँद को हम पर अमन (शांति), ईमान, सलामती, इस्लाम और उन चीजों की तौफीक के साथ प्रकट कर, जिन्हें तू पसंद करता है और जिससे तू राज़ी होता है। (ऐ चाँद!) हमारा और तेरा रब अल्लाह है।"

(अल-कलीम अत-तय्यिब: 162, सहीह बुखारी)

दुआ नंबर:3

اللَّهُمَّ أَهْلُهُ عَلَيْنَا بِالْإِيمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْإِسْلَامِ، رَبِّي وَرَبُّكَ اللَّهُ، هِلَالٌ خَيْرٌ وَرُشْدٌ
في تعليق السلسلة الضعيفة: 3509، ثابت

"हे अल्लाह! इस चाँद को हमारे लिए यमन (कल्याण) और ईमान (विश्वास), सलामती और इस्लाम के साथ प्रकट कर। मेरा और तेरा पालनहार अल्लाह है। यह चाँद भलाई और मार्गदर्शन वाला हो।"

"सिलसिला अल-ज़ईफ़ा (कमजोर हदीस) में टिप्पणी: 3509, प्रमाणित नहीं।

2. इफ्तार के समय की दुआएं" / व्रत खोलते समय दुआएं

"بسم الله"

3. इफ्तार के बाद दुआ

ذَهَبَ الظَّمْأُ وَأَبْتَلَّتِ الْعُرُوقُ وَثَبَتَ الْأَجْرُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ

"प्यास खत्म हो गई, नसें तर हो गई, और यदि अल्लाह ने चाहा तो इनाम (अज़्र) मिल गया।"

(संदर्भ: अबू दाऊद: 2357)

"मेज़बान के हक़ में दुआ"

أَفْطَرَ عِنْدَكُمْ الصَّائِمُونَ وَأَكَلَ طَعَامَكُمْ الْأَبْرَارُ وَصَلَّتْ عَلَيْكُمْ الْمَلَائِكَةُ

(अनुवाद):

"तुम्हारे पास रोज़ा रखने वाले इफ्तार करें, नेक लोग तुम्हारा खाना खाएं, और तुम्हारे लिए फ़रिश्ते दुआ करें।" (सुनन अबू दाऊद: 3854)

वितिर की दुआ

اللَّهُمَّ اهْدِنِي فِيمَنْ هَدَيْتَ، وَعَافِنِي فِيمَنْ عَافَيْتَ، وَتَوَلَّنِي فِيمَنْ تَوَلَّيْتَ، وَبَارِكْ لِي فِيمَا أَعْطَيْتَ،
وَقِنِي شَرَّ مَا قَضَيْتَ إِنَّكَ تَقْضِي وَلَا يُقْضَى عَلَيْكَ، وَإِنَّهُ لَا يَذِلُّ مَنْ وَالَيْتَ، وَلَا يَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ،
تَبَارَكَتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ، أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ، وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ

"हे अल्लाह! मुझे उसी तरह मार्ग दिखा जिस तरह तूने मार्ग दिखाया, मुझे सुरक्षित रख जिस तरह तूने सुरक्षित रखा, मेरी सहायता कर जिस तरह तूने सहायता की, और जो कुछ तूने मुझे दिया उसमें बरकत दे। और मुझे उस बुराई से बचा जिसे तूने निर्धारित किया है। निश्चित रूप से, तू निर्णय करता है और कोई तुझ पर निर्णय नहीं कर सकता। जिसे तू दोस्त बना ले, वह अपमानित नहीं होता और जिसे तू दुश्मन बना ले, वह सम्मानित नहीं होता। तू ही हमारा पालनहार और आशीर्वाद देने वाला है। मैं तुझसे क्षमा मांगता हूँ और तेरी ओर लौटता हूँ। और अल्लाह की कृपा और शांति हो नबी (मुहम्मद) पर।"

वित्र के बाद की दुआ

سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ

अनुवाद: सभी प्रकार की खामियों से पाक बादशाह के लिए पवित्रता है। (नसाई: 1734)

सैयदुल इस्तिग़फ़ार

اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ
مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَبُوءُ بِذَنْبِي، فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ

अनुवाद: "हे अल्लाह! तू ही मेरा रब है, तेरे सिवा कोई माबूद (इबादत के लायक) नहीं। तूने ही मुझे पैदा किया और मैं तेरा बंदा हूँ। मैं अपनी क्षमता के अनुसार तेरे साथ किए गए वादे और अहेद (प्रतिज्ञा) पर कायम हूँ। मैं अपने बुरे कर्मों से तेरी पनाह चाहता हूँ। मैं तेरी दी हुई नेमतों को स्वीकार करता हूँ और अपने गुनाहों को भी स्वीकार करता हूँ। अतः, तू मुझे माफ़ कर दे, क्योंकि तेरे सिवा कोई भी गुनाहों को माफ़ नहीं कर सकता।

लैलतुल क़द्र की दुआ

اللَّهُمَّ إِنَّكَ عَفُورٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي

अनुवाद: ऐ अल्लाह! तू माफ़ करने वाला है और माफ़ी व दरगुज़र को पसंद करता है, तो तू मुझे माफ़ फरमा दे। (इब्ने माजा: 3850)

रमज़ान और कुरआन

कुरआन के आदाब

कुरआन का अर्थ

- ❖ पढ़ना (قرء)
- ❖ एकत्र करना (قرىء)
- ❖ संदर्भ और प्रसंग (قرن)
- ❖ स्पष्ट अर्थ प्रदान करना (تقرئة)

कुरआन इस्लाम की एक दिव्य पुस्तक का नाम है, जिसे अल्लाह तआला ने ज़िब्रील अलैहिस्सलाम के माध्यम से हज़रत मुहम्मद صلی اللہ علیہ وسلم पर अवतरित किया। यह सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली और अत्यंत सम्मानित पुस्तक है।

कुरआन के पाँच प्रसिद्ध नाम

- 1) الكتاب (अलकिताब) – पुस्तक
- 2) القرآن (अल-कुरआन) – पाठ
- 3) الفرقان (अल-फुरक़ान) – भेद करने वाला

4) التنزيل (अत-तनज़ील) – अवतरित किया गया

5) الذكر (अज़-ज़िक्र) – स्मरण

और इसी तरह इसके अन्य नाम भी हैं: برهان، احسن الحديث، الحق، (अल-हक़, अहसनुल हदीस, बुरहान)।

कुरआन का असर

- 1) ऐसी किताब है कि अगर किसी पहाड़ पर नाज़िल की जाए तो वह रेज़ा-रेज़ा हो जाएगा। (हश्व: 21)
- 2) कुछ ग़ैर मुस्लिमों की आँखें बेइख़्तियार आँसू बहाती हैं। (मायदा: 83)
- 3) अहले इमान कांप उठते हैं। (हज: 35)
- 4) रूकते खड़े हो जाते हैं। (ज़ुमर: 23)
- 5) दिल नर्म हो जाते हैं। (ज़ुमर: 23)
- 6) ईमान में इज़ाफ़ा होता है। (अन्फ़ाल: 2)
- 7) समझदारी के साथ इमान वाले सजदे में गिर पड़ते हैं। (बनी इस्राईल: 107)
- 8) खुशू और खुजू बढ़ता है। (बनी इस्राईल: 109)
- 9) कुछ सूरतों ने रसूल अल्लाह (ﷺ) को पहले ही बूढ़ा कर दिया। (तिरमिज़ी: 3297)
- 10) उत्बा बिन रबीअ जैसे कठोर दिल वाले भी कुरआन की प्रभावशाली तिलावत से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। यह तथ्य बिदायह व निहायह (69) में उल्लिखित है।
- 11) कुरआन की तिलावत शहद और शेरिनी जैसी होती है (सहीह मुस्लिम: 2269)।
- 12) अल्लाह के नबी की तिलावत सुन कर जीनों के क़ाफ़ले ने इस्लाम क़बूल किया, इसी तरह जैसे उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और तुफ़ैल बिन अम्र अद-दौसी (जिन : 1 , बिदायह व निहायह, जि. 1, स. 97)।
- 13) अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की तिलावत से बच्चे और ख़्वातीन भी प्रभावित होते थे (सहीह बुखारी: 3905)।

कुरआन की फज़ीलत

तिलावत-ए-कुरआन की फज़ीलत

- 1) तिलावत-ए-कुरआन अल्लाह के साथ वह व्यापार है जिसमें कोई घाटा नहीं (फातिर: 29)
- 2) तिलावत-ए-कुरआन बेहिसाब अज़्र-ओ-सवाब का बाइस है (फातिर: 30)
- 3) तिलावत-ए-कुरआन सुकून और सुकूनत का ज़रिया है (अल-रअद: 27)
- 4) तिलावत-ए-कुरआन मुरदा और आंखों की ठंडक है (सहीह तरगीब: 1822)
- 5) तिलावत-ए-कुरआन मुसीबतों और तकलीफों से निजात का ज़रिया है (सहीह तरगीब : 1822)
- 6) तिलावत-ए-कुरआन रूह और दिल की बहार और परेशानियों से निजात है (सहीह तरगीब : 1822)
- 7) कुरआन का एक हरफ दस नेकी के बराबर है (तिर्मिज़ी: 2910)
- 8) तिलावत-ए-कुरआन और उस अमल करने पर मोमिन होने की बशारत है (सहीह बुखारी: 5020)
- 9) कुरआन की तिलावत और उस पर अमल, मोमिन का दर्जा बुलंद करता है (सहीह बुखारी: 5025)
- 10) महारत से पढ़ने वाले को बड़ा सवाब और अटक-अटक कर पढ़ने वाले को दुगना सवाब मिलता है (सहीह मुस्लिम: 798)
- 11) रोज़-ए-क्रियामत, मोअज़ज़ज़ फरिश्तों के साथ रहने का शरफ मिलता है (सहीह मुस्लिम: 798)
- 12) कुरआन मजीद मुसलमानों की विरासत है (सहीह तरगीब : 83)
- 13) अल्लाह और रसूल से मोहब्बत का ज़रिया है (सिलसिला सहीह: 2342)
- 14) 100 आयतें पढ़कर सोने वाला क्रियाम (तहज़ुद) का सवाब पाता है (सिलसिला सहीह: 644)
- 15) रोज़ाना दस आयतें पढ़ने वाला ग़ाफ़िलों में शुमार नहीं होता (अबू दाऊद: 1398)
- 16) हज़ार आयतें पढ़ने वाले का शुमार बहुत ज़्यादा अज़्र पाने वालों में होता है (अबू दाऊद: 1398)

- 17) कुरआन मजीद की तिलावत समझ कर करने से मुनकर-नकीर के सवाल-जवाब में कामयाबी यक़ीनी हो जाती है। (अबू दाऊद: 4753)
- 18) क़ब्र के अज़ाब से हिफ़ाज़त (सहीह तरगीब : 3561)
- 19) क़यामत के दिन तिलावत करने वाले या हाफ़िज़-ए-कुरआन की रोज़ क़यामत ताजपोशी होगी (सिलसिला सहीह: 2829)

हिफ़ज़े कुरआन मजीद की फज़ीलत

- 1) कुरआन जितना ज़्यादा याद करोगे, उतना ही दर्जा पाओगे (अबू दाऊद: 1464)
- 2) हश्र के दिन ताज पहनाया जाएगा, दाएं हाथ में बादशाहत का परवाना और बाएं हाथ में जन्नत में हमेशा की रहमत का परवाना दिया जाएगा (सिलसिला सहिहाह : 2829)
- 3) मुअज़्ज़ज़ फरिश्तों की सोहबत (सहीह मुस्लिम: 798)
- 4) कुरआन पढ़ने का एहतमाम ज़्यादा से ज़्यादा करना चाहिए, वरना भूल जाओगे
- 5) दिन की रात में जब मौक़ा मिले, कुरआन पढ़ा करो

कुरआन मजीद सुनने और सुनाने की फज़ीलत

- 1) ध्यान और खामोशी से सुनने पर अल्लाह की रहमत (अल-आ'राफ़: 204)
- 2) रहमत के फ़रिश्ते आसमान से नाज़िल होते हैं (सहीह बुख़ारी: 5018)
- 3) "नबी ﷺ को आदेश दिया गया कि आप उबी बिन काब (रज़ियल्लाहु अन्हु) के सामने कुरआन मजीद पढ़ें और सुनें। (सहीह बुख़ारी: 4960, सहीह मुस्लिम: 799)"
- 4) नबी (ﷺ) दूसरों से कुरआन मजीद सुनना पसंद फ़रमाते थे
- 5) सालीम रज़ि. अल्लाह अन्हुम कुरआन को सुनने का एहतमाम फ़रमाते

अपने बच्चों को कुरआन से जोड़ो

माता-पिता को क़यामत के दिन ऐसे कीमती लिबास पहनाए जाएंगे कि दुनिया उनकी चीज़ें मामूली नज़र आएगी।

जिन सूरों को याद करने की कोशिश करनी चाहिए (अगर पूरा कुरआन हिफ़ज़ न करें)।

सूरा फ़ातिहा, सूरा अल-बक्रा, सूरा आल-इमरान, सूरा हूद, सूरा बनी इस्राईल, सूरा कहफ़, सूरा यासीन, सूरा अल-हदीद, सूरा अल-मुल्क, सूरा अल-वाक़िआ, सूरा अल-जुमुआ, सूरा अल-मुनाफ़िकून, सूरा अल-दहर, सूरा मुजादिला और वो सूरें जिनमें अल-रसालत, बयान, तज़किर, इनफ़ाल, इनशिक़ाक़, अल-आला, शम्स, काफ़िरून, इख़लास, फ़लक़, और नास हैं।

विभिन्न मशवरे :

- 1) सूरा क़ से सूरा अन-नास तक।
- 2) सूरा अल-आला से सूरा अन-नास तक।
- 3) सूरा अज़-ज़ुहा से सूरा अन-नास तक (आम लोग कम से कम इतना तो याद करें)।

कुरआन से संबंधित ज़ईफ़ और मनगढ़ंत बातों की सूची

- 1) सूरह यासीन कुरआन का दिल है। (साबित नहीं)
- 2) मुर्दे के पास सूरह यासीन की तिलावत। (साबित नहीं)
- 3) क़ब्रिस्तान जाकर सूरह यासीन पढ़ना। (साबित नहीं)
- 4) जुम्मा को ख़ास तौर पर सूरह यासीन पढ़ना। (साबित नहीं)
- 5) सूरह रहमान कुरआन की दुल्हन है। (साबित नहीं)
- 6) सूरह वाक़िआ से फ़क़ और फ़ाक़े का ख़ात्मा। (यह हदीस ज़ईफ़ मानी गई है)
- 7) क़ब्रिस्तान जाकर फ़ातिहा, कुल वाली सूरहें पढ़ना और बख़्शना। (साबित नहीं)

कुरआन की तिलावत के आदाब

1. ता'व्वुज़ पढ़ना: (أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ)

(नहल: 98)

2. तस्मीया पढ़ना: (بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ)

(अलअलक: 1)

3. ठहर-ठहर कर, आराम और सुकून से पढ़ना:

(अलमुज़म्मिल: 4)

4. तिलावत के दौरान समझकर आंसू बहाना:

(बनी इसराईल: 109)

5. एक ही आयत बार-बार दोहराना जायज़ है (तासीर और तफहीम के तौर पर)।
(इब्ने माजा: 1350)
6. अच्छी से अच्छी आवाज़ में पढ़ना
(अबू दाऊद: 1468)
7. कुरआन को फ़ितरी लहजे में बिना तकल्लुफ़ के पढ़ना चाहिए
(सहीह बुखारी: 5047)
8. आवाज़ में नमी और लरज़िश (खुशू की कैफियत) हो
(सहीह तरीब: 1450)
9. ऊँची (दूसरों को तकलीफ़ न हो) और आहिस्ता, दोनों आवाज़ में तिलावत जायज़ है।
(अबू दाऊद: 1333)
10. अपनी तिलावत से मस्जिद में दूसरों को तकलीफ़ न दें।
(मुसद्द अहमद: 11915)
11. ख़ौफ़ की आयत पर पनाह मांगना और रहमत की आयत पर रहमत का सवाल करना तथा तसबीह वाली आयत पर अल्लाह की पाकीज़गी बयान करना मुस्तहब (अच्छा) है।
(सहीह इब्ने हिब्बान: 4782)
12. तजवीद का ध्यान रखें (लहजे में अतिशयोक्ति न हो)।
(सहीह बुखारी: 5045)
13. जमाई पर नियंत्रण रखें।
(सहीह मुस्लिम: 2995)
14. चलते-फिरते और यात्रा के दौरान तिलावत करना जायज़ है।
15. रग़बत और शौक़ की हालत में तिलावत ना की बेज़ारी की हालत में (सहिस बुकह :)
16. तीन दिनों से कम अवधि में कुरआन ख़त्म न करें (तिर्मिज़ी: 2949)। कुछ उलमा ने केवल रमज़ान में इसकी अनुमति दी है, सहाबा के अमल को प्रमाण मानते हुए (लताइफ़ुल मआरिफ़ लिब्र रजब, पृष्ठ 171)।
17. हायज़ा (मासिक धर्म) वाली महिला दस्ताने पहनकर या कपड़े की आड़ से कुरआन के मुसहफ़ (पुस्तक) को छू सकती है। यह इब्र बाज़ का फ़तवा है (ईखतेलाफ़ से बाहर निकलने की यह एक स्थिति है) (सहीह बुखारी मुअल्लक़: 297)।
18. जनाबत (अपवित्रता) की स्थिति में कुरआन पढ़ना मना है। (तिर्मिज़ी: 146)

19. तिलावत (कुरआन पढ़ने) के लिए कोई निश्चित निषेध समय नहीं है। (तिरमिज़ी: 146)
20. गानों की धुन में कुरआन न पढ़ें। (सिलसिला सहीहा : 979)

कुरआन की तिलावत के दौरान ग़ैर साबित रस्में (अस्थायी प्रथाएं)

- 1) क़िबला रुख़ होकर पढ़ना अनिवार्य समझना
- 2) मिस्वाक को अनिवार्य समझना
- 3) ख़त्मे कुरआन (पूरे कुरआन की तिलावत) पर रोज़ा रखना
- 4) कुरआन को मृतकों के लिए बख़्शना (उनकी आत्मा को सौगात देना)
- 5) मृतक के लिए सामूहिक तिलावत
- 6) "बिस्मिल्लाह" का ख़ास तरीक़े से समाप्त करना
- 7) "आयत करीमा" (ला इलाहा इल्ला अंत...) का सामूहिक विरद (जप)
- 8) ख़त्मे कुरआन पर मनगढ़ंत (ग़लत तरीक़े से बनाई गई) दुआ पढ़ना

सज्दा-ए-तिलावत के अहकाम (नियम)

- 1) इब्लीस की रवीश से दूरी
- 2) सज्दा-ए-तिलावत पढ़ने और सुनने वाले दोनों के लिए मुस्तहब (अच्छा) है, लेकिन फ़र्ज़ नहीं। (सहीह बुखारी: 1079)
- 3) सज्दा-ए-तिलावत के लिए वुजू होना बेहतर (अफ़ज़ल) है, लेकिन ज़रूरी नहीं। इसी तरह क़िबले की दिशा में होना भी अनिवार्य नहीं।
- 4) सवारी पर सज्दा-ए-तिलावत करना जाइज़ (अनुमेय) है।
- 5) सज्दे की मसनून (सुनन्ना) दुआ:

سَجَدَ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ بِحَوْلِهِ وَقُوَّتِهِ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ

(अबू दाऊद: 1414)

अनुवाद: मेरा चेहरा उस ज़ात के लिए सज्दा कर रहा है जिसने उसे पैदा किया, उसके कान और आंखों को खोला अपनी ताकत और शक्ति से। तो अल्लाह सबसे बेहतरीन बनाने वाला है।

- 6) सज्दा तिलावत के बाद "अल्लाहु अकबर" कहकर सज्दे से सिर उठाना साबित नहीं।
- 7) "अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह" कहकर सलाम फेरना भी साबित नहीं।

रमज़ान के बाद स्थिरता (इस्तेक्रामत) के कारण

स्थिरता के साधन और कारण

- 1) तक़वा (परहेज़गारी) प्राप्त करने के बाद उसकी हिफ़ाज़त का ख़याल रखें।
- 2) नमाज़ों की हिफ़ाज़त करें।
- 3) आयतों पर ध्यान देने से आज्ञापालन और इबादत में आनंद महसूस होता है।
- 4) कुरआन और मस्जिद से संबंध रखने से भलाई और बरकत मिलती है।
- 5) अल्लाह से गहरा रिश्ता।
- 6) सिला रहमि
- 7) ज़कात और नफ़ली सदकात।
- 8) आख़िरत की सोच।
- 9) मौत की याद।
- 10) इस्लामी ज़िंदगी (lifestyle) अपनाना।
- 11) ज़बान, नज़र और जिस्म की हिफ़ाज़त (ग़ैर-इस्लामी चीज़ों से बचना)।
- 12) समय को व्यर्थ करने से बचाना।
- 13) दावत और सुधार के कार्य।
- 14) दुआ, हिदायत और तौफ़ीक़ की माँग।
- 15) अच्छे कार्य या पॉज़िटिव सोच: घर के सुधार से शुरू कर छोटी चीज़ों को बेहतर करना, ग़रीबों और ज़रूरतमंदों की मदद करना, शिक्षा देना आदि।
- 16) "और अपने रब की इबादत करते रहें जब तक कि आपके पास मौत न आ जाए।" (सूरह अल-हिज़्र: 99)

وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَاثًا تَتَخِدُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ وَلِيُبَيِّنَ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ

अनुवाद: और उस औरत की तरह न हो जाओ जिसने अपना धागा मज़बूती से कातने के बाद टुकड़े-टुकड़े करके तोड़ डाला। तुम अपनी क़स्मों को आपस में छल-कपट का बहाना न बनाओ, ताकि एक समूह दूसरा समूह से बड़ा हो जाए। बात सिर्फ़ यही है कि अल्लाह तुम्हारी परीक्षा ले रहा है, और निश्चित रूप से अल्लाह क़यामत के दिन तुम्हारे बीच उन चीज़ों को खोलकर बयान कर देगा, जिनमें तुम मतभेद किया करते थे।

- 17) वक्तिया मुस्लमान ना बनें हमेशा के लिए परिवर्तन लाइये
- 18) क़बूलियत के लिए दुआ करनी चाहिए।
- 19) नेकी और तक्रवा में घमंड नहीं आना चाहिए।

"चीजें और आदतें जो आपको दृढ़ता से वंचित करती हैं"

- 1) दुनिया की मोहब्बत
- 2) ग़लत वासनाओं की मोहब्बत
- 3) आत्मा (नफ़्स) की मोहब्बत
- 4) वर्जित लोभ और लालच
- 5) घमंड, दिखावा, झूठी गवाही, निर्धारित वर्जित हर्दें, क्रोध (गुस्सा)
- 6) गैर-शरई अतिरेक और चरमपंथ, अपव्यय (इस्त्राफ़) और कंजूसी
- 7) ज्ञानी (अहले इल्म) की सभा से दूरी
- 8) मस्जिदों से दूरी
- 9) अच्छे लोगों से दूर रहना, स्वास्थ्य की बर्बादी, बेकार काम और बुरा हाल

10. रजब, शाबान और शव्वाल – संक्षिप्त परिचय

माहे रजब:

- 1) रजब महीना हराम (सम्मानित) महीनों में से एक है। (सहीह बुखारी: 3197)
- 2) रजब के महीने में विशेष रोज़े रखने का कोई प्रमाण नहीं है। (अल-मौजूआत, इब्र अल-जौज़ी: खंड 1, पृष्ठ 578)
- 3) रजब के महीने में विशेष नमाज़ (सलात-उर-रगाइब) पढ़ने का कोई प्रमाण नहीं है।
- 4) रजब की सत्ताईसवीं रात को शब-ए-मेअराज के नाम से ईद मनाना साबित नहीं है।
- 5) रजब की सत्ताईसवीं रात की इबादत और अगले दिन का रोज़ा रखना साबित नहीं है। (अल-आथार अल-मरफूआ: पृष्ठ 77)
- 6) रजब में उमरा करने की कोई खास फज़ीलत वर्णित नहीं है। (सहीह मुस्लिम: 1255)
- 7) रजब के कुंडे करना बिदअत (नवाचार) है। धर्म की तकमील (समापन) के बाद यह एक नया कार्य है, जो इस लिहाज़ से बिदअत है। (तिर्मिज़ी: 2676)

शाबान का महीना

- 1) शाबान में रोजा मसनून है। (अबू दाऊद: 2431) 16 शाबान से रमज़ान की शुरुआत तक रोज़ा रखना पसंदीदा नहीं है, लेकिन जो लोग इसके आदी हैं, उनके लिए साल भर सोमवार और गुरुवार को रोज़ा रखना जायज़ है, उसी तरह जो शाबान (शेख बिन बाज़) के पहले दिन से रोज़ा रखते हैं।
- 2) अशाबान को नबी का महीना कहना गलत है (ज़ैफ़ अल-जामी: (3402)
- 3) शाबान की पंद्रहवीं तारीख को शब-ए-बारात मनाना एक नवीनता है तिमिज़ी २६७६
- 4) शब-ए-बारात से जुड़ी सभी रिवायतें कमजोर और मौजू हैं। (इब्न रज्जब के लताइफ़ अल-मारिफ़)
- 5) सलात अलफ़ीय्याह एक मनगढ़ंत प्रार्थना है।
अल मौजूआत : जिल्द २, पेज 443-4402
- 6) शाबान, की पंद्रहवीं रात को फैसलों की रात है कहना गलत तशरीह है (इब्न कथिर: खंड 4, पृष्ठ .163)
- 7) शेख अल-अल्बानी के शोध के अनुसार शाबान की पंद्रहवीं रात के बारे में केवल एक हदीस सही है कि इस रात को अल्लाह बहुदेववादी और द्वेषपूर्ण के अलावा वे सभी प्राणियों को क्षमा कर देते हैं। (सिलसिला सहिहाह: (1144)
- 8) शब-ए-बारात पर मुर्दे घर आते हैं, यह मान्यता झूठी है।

माहे शव्वाल:

- 1) शव्वाल के छह रोज़े रखना सुन्नत है। (सहीह मुस्लिम: 1164)
- 2) जो रमज़ान के साथ शव्वाल के छह रोज़े रखे, उसे साल भर के रोज़ों का सवाब मिलेगा। (इब्न माजा: 1715)
- 3) लगातार छह रोज़े रखना ज़रूरी नहीं, पूरे महीने में कभी भी छह रोज़े रख सकते हैं।
- 4) छह दिन के बाद झूठी ईद मनाना साबित नहीं है।
- 5) शव्वाल महीने का संबंध हज के अशहर (महीनों) से होता है। (सूरह बक्ररह: 197, सहीह बुखारी : 1560)





www.abmqurannotes.com | www.askislampedia.com | www.askmadanicom

SHAIKH Dr. ARSHAD BASHEER UMARI MADANI waffaqahullah

Hafiz and Aalim, Fazil (Madina University, K.S.A), M.B.A

Founder & Director of AskIslamPedia.com

Chairman: Ocean the ABM School, Hyderabad, TS, INDIA

+91 92906 21633 (WhatsApp only)